काम की प्रशंसा में

H
170.202 Sa 77 K

स. आ. सप्रे

H
170.202
Sa 77 K

काम की प्रशंसा में

स. आ. सप्रे

अनुवाद
डा. रामचन्द्र मिश्र

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्राऽपि च ते न प्रसिध्येदकर्मणः ॥

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली

IIAS, Shimla
Library
H 170.202 Sa 77 K
00091310

H
170.202
Sa 77 K

Acc. No. 91310
23-2-91

1983 (शक 1905)

स. श्रा. सप्रे, 1980

मूल्य : 6.50

In praise of work (*Hindi*)

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित एवं गजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस, K-32, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 में मुद्रित।

प्रस्तावना

एक समय नेपल्स में एक धनी यात्री सबसे बड़े आलसी को पुरस्कृत करना चाहता था। जब उसे आलस्य में डूबे हुए बारह भिखमंगे धूप में पड़े दिखलाई दिये उसने सबसे बड़े आलसी को एक लिरा देने का प्रस्ताव किया। यह सुनते ही उनमें से ग्यारह तत्काल उठ खड़े हुए, इससे उसने यह पुरस्कार बारहवें को दे दिया। बट्रैण्ड रसेल ने "आलस्य की प्रशंसा में" नामक अपनी पुस्तक में इस मनोरंजक कहानी का वर्णन किया है।

उन्होंने यद्यपि स्पष्ट रूप से आलस्य का समर्थन किया है, पर रसेल स्वयं थकान का अनुभव न करने वाले एक श्रेष्ठ परिश्रमी व्यक्ति थे। मंद गति से पैदल घूमने-फिरते के समय भी वह दृश्यों की प्रशंसा तथा साधारण स्तर की बातें करने के स्थान पर निरंतर दर्शन की बातें किया करते थे। दस वर्ष तक उन्होंने बौद्धिक श्रम को अपने आदर्श ग्रंथ प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका में लगाये रखा, जिसे अरस्तू के बाद तर्कशास्त्र पर एकमात्र श्रेष्ठ ग्रंथ होने का सम्मान प्राप्त है। इस ग्रंथ के संदर्भ में उन्होंने कहा है कि यह ग्रंथ इतना श्रमसाध्य था, संभवत: इसने उनके व्यक्तित्व को ही बदल दिया, पर इसकी समाप्ति तक उन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमता को उस ओर उन्मुख रखा। वह नब्बे वर्ष की आयु होने तक प्रतिदिन बारह घण्टे काम करते थे। उन्होंने कहा है "बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह आजन्म काम करता रहे।"

आज काम उपेक्षित है और प्राय: लोग काम से भागते हैं। नैराश्य प्राय: विश्वव्यापी है और इसका औचित्य सिद्ध करना लोकाचार बन गया है। प्राय: प्रत्येक यह अनुभव करता है कि उसे कम पारिश्रमिक मिलता है। कितने ही यह शिकायत करते हैं कि उनका काम नीरस और अरुचिकर है, जब कि कुछ को यह दु:ख है कि उनके अच्छे काम का कोई प्रशंसक नहीं है। कई बुद्धिमान अधिक आराम और कम काम के भी प्रस्तावक हैं। सम्प्रति संसार में श्रमसाध्य काम के विषय में अनेक पुस्तकें लिखी गई हैं। नौकरियों को यथासाध्य नवीन ढांचे में ढाला जाए, उनकी संख्या बढ़ाई जाए और उन्हें अधिक वेतनयुक्त बनाया जाए, यह

यथार्थ आवश्यकता है। यह भी मान्य तथ्य है कि काम सम्बन्धी वास्तविक असुविधाएं तत्काल ही न्यूनतम करदी जाएं, पर मनुष्य एक अभावग्रस्त जीव है और उसके दुःख सदैव रहेंगे। यह भी सुनिश्चित तथ्य है कि काम नहीं' रोटी नहीं (सिद्धान्त) के सन्दर्भ में अरुचिकर काम तक श्रेष्ठ ठहरता है। श्रमसाध्य काम के बिना वास्तविक आराम की अनुभूति नहीं हो सकती। वॉल्टेयर के अमर श्रेष्ठ ग्रंथ 'कान्दिदे' में व्यक्त भविष्यवाणी के शब्द भुलाए नहीं जा सकते हैं। उनका कथन है कि ऊब मानव जीवन की सबसे बड़ी बुराई है और काम-ऊब, दुर्गुण और निर्धनता तीन बड़ी बुराइयों को विनष्ट करता है।

इस पुस्तिका द्वारा यथासम्भव सरलतम रूप से यह व्याख्या करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार आत्मिक निराशा और निज के विनाश को रोकने के लिए काम मानव जीवन का सच्चा सहायक, गुरु और अन्ततः संरक्षक है। जीवन के प्रत्येक स्तर पर अनुशासित रूप से काम का सम्पादन ही आधुनिक सभ्यता है। यह आर्थिक विकास की कुंजी है। काम के प्रति समर्पित हुए बिना निर्धनता का उन्मूलन विचार की सीमा के परे है। केवल काम ही व्यक्ति के व्यक्तित्व, उसके समाज और संस्कृति को स्थिर रख सकता है।

मानव अपना समाज निर्मित करता है और समाज बदले में उसे अपने साँचे में ढालता है। आनन्द अन्ततः सब सुखों का योग नहीं है, पर वह है उन्मुक्त कर्मशीलता। काम ही केवल स्थायी आनन्द का स्रोत है।

यह पुस्तिका दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और समाज शास्त्रीय महत्ता की अभिव्यक्ति का दंभ नहीं करती है। यह आवश्यक रूप से एक सामान्य व्यक्ति के लिए मार्ग-दर्शिका है और व्यक्ति क्यों अपने काम के प्रति निष्ठा और रुचि रखे इस तथ्य की व्याख्या प्रस्तुत करती है। इसका प्रतिपाद्य सरलता से इस एक वाक्य में समन्वित किया जा सकता है: "काम जीवन का मात्र अंग नहीं, पर स्वयं जीवन है।

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ
1. काम का संसार	1
2. काम तीन बुराइयों को विनष्ट करता है : ऊब, दुर्गुण और निर्धनता	4
3. काम स्वाभाविक है जैसे खेल या आराम	9
4. काम से आराम है	11
5. काम का स्वरूप	14
6. सहकारिता काम में जुटाती है	18
7. आराम काम को समृद्ध करता है	20
8. काम खेल हो सकता है	25
9. काम सुन्दर हो सकता है	28
10. काम क्रियात्मक हो सकता है मार्क्स और स्पेन्सर	31
11. राष्ट्रीय विकास के लिए अनुशासित काम आवश्यक है	34
12. सफलता की प्रेरणा	38
वेवर की कल्पना	
मेक्कलीलाण्ड की कल्पना	
सफलता की प्रेरणा की अनुपस्थिति	
13. काम एक नैतिक बाध्यता है	43
वीर पेण्ढारकर	
14. काम हमारा सबसे बड़ा गुरु है	46

	पृष्ठ
15. लघु क्रान्तिकारी होता है	49
पहाड़ों को हटानेवाला मूर्ख वृद्ध मनुष्य	
16. काम शोक का वास्तविक विषहर	52
जेम्स टॉमसन	
17. काम आत्मानुभूति की ओर उन्मुख करता "है"	54
18. प्रेरणा : आरोग्यशास्त्र का सिद्धान्त	59
मानवीय और पाशविक आवश्यकताएं	
मानसिक विकास	
माण्टेगू नार्मन	
19. उपसंहार	65
20. संदर्भ ग्रंथ	66

"वौद्ध धर्म के दृष्टिकोण से काम की तीन गुनी उपयोगिताएं है : (1) व्यक्ति को अपनी आन्तरिक क्षमता के उपयोग और उसकी अभिवृद्धि का सुयोग देना, (2) एक ही काम में दूसरे लोगों से मिलकर काम करने से अहंकार पर विजय प्राप्त करने के योग्य होना, और (3) अपने अस्तित्व के लिए अच्छाइयों और सेवाओं को आगे लाना। फिर इस दृष्टिकोण के अनन्त परिणाम हैं। काम करने की यदि इस प्रकार की व्यवस्था हो कि उसके करनेवाले को वह निरर्थक, कष्टप्रद, विवेकहीन और तनावपूर्ण प्रतीत हो तो वह उसके लिए अन्याय है। इस व्यवस्था का लोगों की अपेक्षा पदार्थों से अधिक सम्बन्ध होगा, साथ ही सांसारिक अस्तित्व की प्राथमिक स्थिति की ओर यह निर्दय आत्मविनाशक दोष को प्रकट करेगी। इस तथ्य के समान ही काम के विकल्प के स्थान पर केवल आराम भोगने के लिए प्रयास करना मानवीय अस्तित्व की वास्तविकताओं के प्रति एक भ्रान्ति होगी—जैसे काम और आराम एक ही जीवन—पद्धति के पूरक अंग हैं और काम करने के आनन्द और आराम के सुख को मिटाए बिना उनको अलग-अलग नहीं किया जा सकता है अर्थात् काम के साथ ही आराम का भोग बद्ध है, काम के बिना आराम की कामना अनीति और अन्याय है !"

'लघु सुन्दर है'—ई० एफ० शूमाकर

सुखा आंग देऊं नये । प्रेत्ले पुरुषें सांडूं नये ।
कष्ट करितां त्रासों नये । निरंतर ।।
व्यापकपण सांडूं नये । पराधेन होऊं नये ।
आपलें वोझें घालूं नये । कोणीयेकासी ।।

—दासबोध 2/2

स्वयं को केवल सुख-विलास के लिये समर्पित न करदो
परिश्रम करना मत छोड़ो
लगातार प्रसन्नतापूर्वक काम करो
अपने में व्यापक भाव उत्पन्न करो
दूसरों के आश्रित न बनो
और न अपना भार उन पर डालो

—समर्थ रामदास

1. काम का संसार

काम का संसार व्यक्ति की इच्छा पर आश्रित है, पर वह आकर्षक है। वह अपेक्षित रूप से निरन्तर असंतोष, अशांति और निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर बढ़ने वाला संसार है। फिर भी यह मानवीय उपलब्धियों और उसके स्थायी आनंद का संसार है। इस संसार का औद्योगिक क्षेत्र विशेषतः उत्तेजनापूर्ण और सदैव अस्थिर है। उदाहरणस्वरूप, दुर्गापुर स्टील मिल्स की व्यापक हड़ताल एक साधारण मजदूर के अपने निरीक्षक के औजार लाने के आदेश को अस्वीकार करने के कारण हुई थी, जो मजदूर के नियमित काम का एक अंग था। इंगलैण्ड में 1926 ई. की विशाल सामान्य हड़ताल एक अनपेक्षित घटना के फलस्वरूप घटित हुई थी— "डेली मेल" प्रेस के यंत्र-कक्ष के कर्मचारियों ने "राजा और देश के लिए" संज्ञक सम्पादकीय को, जिसे उन्होंने उत्तेजनाजनक समझा था, छापना अस्वीकार कर दिया था। 1972 ई. में' जनरल मोटर्स, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के कुछ कर्मचारियों ने हड़ताल उंची मजदूरी के लिए न की थी, वरन् की थी काम सम्बन्धी जीवन के उच्चस्तरीय विशिष्ट उद्देश्य के लिए। इस विचारणा की दूसरी सीमा पर उल्लेखनीय उपलब्धियां भी हैं—1953-1961 ई. में जापान में 217 प्रतिशत उत्पादन की अभिवृद्धि हुई, जो आश्चर्य में डाल देने वाली है। 1965-1970 ई. में जापान में प्रति व्यक्ति उत्पादन व्यय 3 प्रतिशत बढ़ा, जबकि इसकी तुलना में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में यह 22 प्रतिशत बढ़ा, जो साधारणतः विश्वास योग्य नहीं है। लोग अपनी समृद्धि और सुधरे हुए अच्छे स्तर के जीवन के लिए संसार के एक भाग से जाकर दूसरे भाग—में प्रवास कर रहे हैं। उदाहरणार्थ, कोरिया की परिचारिकाएं स्वयं कोरिया की अपेक्षा पश्चिमी जर्मनी में अधिक हैं। गठीले व्यक्तियों के अभाव में तुर्की के जनपद सूने हो गए हैं। विकसित "योरुपीय आर्थिक मण्डल'(European Economic Community)में साठ लाख और स्विटजरलैण्ड में दस लाख विदेशी कर्मचारी हैं।

संसार के सभी राष्ट्रों में सबसे अधिक धनी होने पर भी अमेरिका में बेरोजगार युवकों का सबसे ऊंचा अनुपात है, जो एक अद्वितीय भेद का विषय है। भारत में

बेरोजगारी की समस्या अब विचलित कर देने वाले अनुपात पर पहुंच गई है। निम्न-स्तरीय रोजगार में लगे लाखों व्यक्तियों को यदि आंशिक रूप से छोड़ दें तो रोजगार दफ्तरों में चार करोड़ बेरोजगार व्यक्तियों के नाम लिखे हुए हैं। आधुनिक संसार अधिकांशतः काम-सम्बन्ध के चतुर्दिक निर्मित है। काम मानव जीवन के केन्द्र में स्थित है। बेरोजगार व्यक्ति किसी भी जाति अथवा समुदाय का सदस्य नहीं रह पाता है। वह पूर्णतया उपेक्षित और निराश रहता है। एक बेरोजगार कर्मचारी ने अपना संताप निम्नांकित शब्दों में व्यक्त किया था :

"मैं अन्दर ही अन्दर खौलता हूं, पर अधिकांशतः मैं उसकी अनुभूति करता हूं। मैंने कभी सोचा भी न था कि घर की शान्ति और बच्चों पर मेरा नियंत्रण मेरे काम पर निर्भर था। क्योंकि, काम तुम्हारे जीवन को नियमित रखता है।"

काम मुख्यतः बहुसंख्यक लोगों की जीविका का साधन हैं। किन्तु काम अनगिनत प्रकार के होते हैं, जिनमें वैविध्य रहता है। मानवीय आवश्यकताएं और भावनाएं असीम और व्यापक हैं, जो अभिवृद्धिशील हैं और यह कहा जा सकता है कि किसी प्रकार की क्रियाशीलता, जो सर्वाधिक रूप से आवश्यकताओं को पूर्ण और भावनाओं को तृप्त करती है, काम से सम्बद्ध है। फलतः यह कहना कि धन ही काम का प्रेरक है, भयंकर रूप से भटकाने वाला तथ्य है। यह संकेत किया जा चुका है कि सब से सीधे-सादे समाजों तक में मानव भौतिक पदार्थों का मूल्यांकन करते हैं, क्योंकि उनके द्वारा ही गौरव, आदर और अधिकार जैसी सामाजिक मान्यताएं सम्भव हैं।

महान् नृशास्त्री मलिनोवस्की ने संकेत किया है कि ट्रब्रियण्ड द्वीप के निवासियों को जीवन में जितनी आवश्यकता होती है उसकी तुलना में वे अधिक उत्पादन करते हैं। कृषि-कर्म उनके लिए केवल जीवन का साधन नहीं है, वरन् यह उनके आनन्द का स्रोत भी है।

उदाहरणस्वरूप, कृषि-कर्म में वहां के निवासी अपनी आवश्यकता से, कहीं अधिक उत्पादन करते हैं और अनुपात में एक वर्ष में वे जितना खा सकते हैं, सम्भवतः उससे दुगुनी फसल वे काटते हैं···फिर वे अधिक उत्पादन इस प्रकार से करते हैं कि फसलें उगाने की तुलना में उन्हें कहीं अधिक काम करना पड़ता है। कृषि-क्षेत्रों को सुन्दर बनाने के उद्देश्य से वे अपना अधिक समय उनकी दुरुस्ती, सफाई, गन्दगी हटाने में लगाते हैं। यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि वे जादूगिरी के समारोहों और सामुदायिक उपयोग के लिए कई काम मात्र अपने को सुशोभित करने के लिए करते हैं। इस प्रकार भूमि की पूर्ण सफाई हो जाने पर वह बोआई के लिए तैयार हो जाती है। वहां के निवासी प्रत्येक खेत को छोटे-छोटे खण्डों में बांट लेते हैं, जिनमें प्रत्येक कुछ गज लम्बा और कुछ गज चौड़ा होता है और यह खेतों के स्वच्छ दिखने के साथ उपयोग के लिए किया जाता है।

पशु, तक अपने भोजन और आश्रय की व्यवस्था के लिए काम करते हैं। उदाहरणार्थ, चींटियां उचित ढंग से अनुशासित काम करने के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं। एक चींटी वस्ती में नर चींटियों का एक छोटा समुदाय आवास बनाने और भोजन एकत्रित करने के दायित्व को निभाता है। इसी प्रकार से मधुमक्खियां भी बड़े व्यवस्थित रूप से काम करती हैं, किन्तु मनुष्य का काम पशुओं के काम की तुलना में अधिक मूल्यवान होता है। मार्क्स ने कहा है: "मधुमक्खियों में शिल्पकार की अयोग्यता स्पष्ट रहती है, क्योंकि शिल्पकार मानव निर्माण करने से पूर्व अपनी कल्पना के अनुसार वास्तविक ढांचा पहले बना लेता है।"

मानवीय मनोविज्ञान के प्रतिपादक द्वारा यह परीक्षित तथ्य है कि काम उच्च प्रकार से उन्नत व्यक्तियों के व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन जाता है। ऐसे व्यक्ति केवल उनके द्वारा किए कार्यों से समझे जा सकते हैं। मानव बुद्धि की आजीवन अस्त-व्यस्तता से सम्बद्धता के कारण मास्लो ने मानसिक उपचार के द्वारा मानव जाति के सुधार की आशा का परित्याग कर दिया है। मानव प्रसन्नता की कामना करते हैं, किन्तु वह गौण उपलब्धि है, वह सीधे प्राप्त नहीं होती है। वह प्राप्त होती है व्यवस्थित, कष्ट सहिष्णु और सार्थक काम से। मास्लो का अंतिम निर्णय गम्भीर और फिर भी सरल है: "भाग्य ने जो काम तुम्हें करने को दिया है या जो तुम्हें काम करने को सोंपा गया है या कोई महत्वपूर्ण काम, जिसे करने की अपेक्षा है, उसे कठोर परिश्रम और समर्पित भाव द्वारा भली प्रकार से करने में ही स्वर्ग सम्भव है।"

हमें सम्भवतः विविध सूक्ष्म विधि-विधानों का परिचय नहीं है, जिनमें काम हमारे व्यक्तित्व को सुरक्षित रखता है और गौरवान्वित बनाता है। अन्ततः यह काम ही है, जो हमारे जीवन को सार्थक और आनन्दोपयोग के योग्य बनाता है और वास्तव में जब तक लोगों में अपने काम के प्रति उत्साहपूर्ण ललक नहीं है, उच्चस्तरीय सभ्यता सम्भव नहीं है। आगे के पृष्ठों में यह सरल वरन् गम्भीर महत्वपूर्ण प्रतिपाद्य मनोरंजक पद्धति से चित्रित करने का एक प्रयास किया गया है।

2. काम तीन बुराइयों को विनष्ट करता है: ऊब, दुर्गुण और निर्धनता

वॉल्टेयर एक विलक्षण पुरुष थे। वह वाग्विदग्ध अमर लेखकों के मध्य परिगणित हैं और "कान्दिदे" उनका वाग्विदग्ध उपन्यास है। यह गम्भीर दार्शनिक उपन्यास भी है। इसका प्रतिपाद्य प्रश्न है कि मानव जीवन में इतनी अधिक बुराई क्यों है। कान्दिदे अमर है। इसका बार-बार का अध्ययन कुछ विचार प्रदान करता है और यह सीधा-सादा विश्लेषण प्रस्तुत करता है···। सृजनात्मक कला के क्षण में वॉल्टेयर ने कला के तत्वों और विषय-वस्तु को समान रूप से रखकर उन्हें पूर्णता प्रदान की है और उनके समन्वित रूप द्वारा अपनी कला-कृति का निर्माण किया है, जो निर्दोष और पूर्ण है। कहानी की रूपरेखा इस प्रकार है।

कान्दिदे अतीव प्रिय मधुर स्वभाव का एक बालक है, जो वेस्टफलिया में एक ताल्लुकेदार के आश्रय में रहता है। ताल्लुकेदार की पुत्री क्यूनगोण्ड "जो गुलाबी वर्ण की, पूर्णरूप से आकर्षक सुन्दर लड़की है" उससे उसका गाढ़ प्रेम हो जाता है। एक दिन जैसे ही वे भोजन करके जा रहे थे, कान्दिदे ने क्यूनगोण्ड द्वारा गिराया हुआ रूमाल उठा लिया। इस पर उसने (क्यूनगोण्ड ने) अबोध भाव से उसका हाथ पकड़ लिया। उसनें (कान्दिदे ने) अपने भोले-भाले भाव के साथ अप्रितम शिष्टता और ललक के साथ उसका चुम्बन ले लिया। उनके होंठ मिले, नेत्र चमके, घुटने कांप गये···। पर यह सब ताल्लुकेदार ने देख लिया, जो स्वभावतः अत्यधिक क्रोधाकुल हो गया। उसने पीठ पर जोर-जोर से लातें मारकर कान्दिदे को तत्काल ही घर से बाहर निकाल दिया। इस अशोभनीय व्यवहार के लिए क्यूनगोण्ड को भी अपनी कनपटी पर माँ के घूंसे खाने पड़े।

कान्दिदे में विचित्र अनुभवों से युक्त कम्पित करने वाले विवरण हैं, जिन्हें इसका नायक भोगता है। कहानी दुर्भाग्यों की कहानी है, जो तीव्र गति से क्रमश घटित होते हैं। पात्रों को फांसी दी जाती है, कत्ल किया जाता है, जलाया जाता है, कोड़े मारे जाते हैं, अंग-भंग किया जाता है, बलात्कार और अपहरण किया जाता

है तथा मार डाला जाता है, इसके साथ ही विलक्षण गति से उसकी परिस्थिति में सुधार भी होता है। कान्दिदे लिसबन के भूचाल को देखता है। वह पैरा-गुये के जैसुयट राज्य में जाता है। वह करुण भाव से एक नीग्रो दास से बात करता है, जिसका उसके मालिक द्वारा अंग-भंग कर दिया गया था, किन्तु इस चित्र का शुक्ल पक्ष भी है। कान्दिदे को इलडोरेडो (एक कल्पित स्थान) जाने का सुयोग मिलता है, जहां भवन इतने ऊंचे थे कि उनकी छतें आकाश छूती दिखाई देती थीं। वहां सार्वजनिक चौराहों पर शुद्ध पानी, गुलाव जल, और गन्ने की शराब के झरने लगातार वहते दिखाई पड़ते थे······। इलडोरेडो में वन्दीगृह नहीं हैं और वहां का विज्ञान भवन कान्दिदे को आनन्दित करता है, जिससे संवद्ध दो हजार फुट लम्वा गणित और विज्ञान के यंत्रों से सुशोभित वरामदा है। किन्तु इस समृद्ध, वैभवपूर्ण और सुन्दर भूमि में भी कान्दिदे प्रसन्न नहीं है। क्योंकि वह कहता है, "श्रीमती क्यूनगोण्ड के बिना मैं कभी भी प्रसन्न न होऊंगा।"

क्यूनगोण्ड समान रूप से अभागिनी है। कान्दिदे के वहिष्कृत कर दिए जाने के शीघ्र वाद एक रात जब वह सोई होती है, बुलगेरिया के लोग उनके महल पर आक्रमण कर देते हैं और उसके माता-पिता को मार देते हैं। एक छः फीट ऊंचा बुलगेरिया निवासी उसके साथ वलात्कार करना चाहता है, जिसका वह अपनी पूरी शक्ति से विरोध करती है। वह निर्दयी उसकी बायीं जांघ में घाव कर देता है। किसी न किसी प्रकार बुलगेरिया निवासी एक वीर कैप्टेन द्वारा उसे मुक्ति मिलती है, किन्तु उसे कुछ समय के लिए उसकी गृहणी के रूप में रहना पड़ता है, जब कि उसे उसकी कमीजें धोनी पड़ती हैं और उसका भोजन पकाना पड़ता है। तीन महीने में वह उससे परेशान हो जाता है, उसके पास धन भी नहीं बचा है और स्त्रियों के प्रेमी एक यहूदी के हाथ उसे बेच देता है। यहूदी को भी एक ज्येष्ठय परीक्षक (Grand Inquisitor) को अपने सहभागी के रूप में उसकी सुन्दरता का उपभोग करने देने के लिए वाध्य होना पड़ता है। शर्तनामा के अनुसार क्यूनगोण्ड को सोमवार, बुधवार और शनिवार को यहूदी के पास रहना पड़ता हैं और शेष दिन परीक्षक (Inquisitor) के पास। क्यूनगोण्ड शनिवार की रात किसके पास रहे, इस पर कुछ संघर्ष हो जाता है। इस प्रकार की झक्कीपन की घटनाएं इस कहानी में हैं।

इसमें दो अन्य मनोरंजक पात्र हैं—पैनग्लास और मार्टिन। दोनों ही दार्शनिक हैं। पैनग्लास एक परिवार में शिक्षक है और वह जर्मन दार्शनिक लीवनिज का उत्कट अनुयायी है। उसकी मान्यता है कि हम लोग संसार की संभावित श्रेष्ठ गति-विधियों में जीवन-यापन करते हैं, जिसमें प्रत्येक श्रेष्ठ चीज के साथ सम्बन्धित और व्यवस्थित है। दूसरी ओर मार्टिन घोर यथार्थवादी है। उसकी मान्यता है कि मानव बुराई की शक्तियों के द्वारा जन्मा था अच्छाई की शक्तियों द्वारा नहीं।' "मैं

यह विश्वास करने के लिए वाध्य हूं कि मानव का मूल बुराई है ।"

अनन्त दुर्भाग्यों और दुर्दशाओं के अनन्तर कान्दिदे और क्यूनगोण्ड का सम्मिलन होता है और कान्दिदे कुस्तुनतुनिया के समीप एक छोटे से कृषि-क्षेत्र में रहने का निश्चय करता है । हृदय से कान्दिदे दुखी और छल-छिद्र से मुक्त है । क्यूनगोण्ड का अपना सभी सौन्दर्य नष्ट हो चुका है । वह कुरूप हो गई है और जीवन की असह्य स्थिति में पहुंच गई है । कान्दिदे की उसके साथ विवाह करने की जरा भी इच्छा नहीं है, पर केवल उसके अनुरोधस्वरूप वह वैसा करता है ।

कान्दिदे इस प्रश्न पर निरन्तर किंकर्तव्यविमूढ़ है : मानव जीवन में इतने अधिक पाप और कष्ट क्यों हैं ? मानव इतने नीच, पर-पीड़क, निर्दयी, और हत्यारे क्यों हैं ? क्या मानव कभी प्रसन्न और सभ्य हो सकता है ? एक दिन जव ऊव असह्य हो उठती है, एक पात्र आवेश में यह कहता है :

"मुझे जानना है कि नीग्रो डाकुओं द्वारा शत-शत वार का अपहरण, कूल्हों का काट दिया जाना, बुलगेरिया की सेना का युद्ध चलाना, कोड़ों की मार खाना और फांसी पर झूल जाना···अंग-भंग कर दिया जाना वास्तव में इन सव दुर्दशाओं को जिन्हें हमने सहन किया है उन सवका अनुभव करना या कुछ न करते हुए जीवन व्यतीत करना, इन सवमें वुरा क्या है ?

तुर्की में उसके कृषि-क्षेत्र के पड़ोस में एक महान् दार्शनिक निवास करता था और वे निश्चय करते हैं, कि इस प्रश्न पर उसका निर्णय लिया जाए । पैनग्लास ने इस प्रतिनिधि मण्डल का नेतृत्व किया ।

उसने कहा—गुरु, हम आपसे एक तथ्य पूछने आए हैं । क्या आप मुझे यह वतलाने की कृपा करेंगे कि मनुष्य जैसे जीव को जन्म क्यों दिया गया ?

फकीर ने कहा—"इस वात से तुम्हें क्या करना है ? क्या तुम्हारा यह (दर्शन) व्यवसाय है ? जव वादशाह एक जहाज मिश्र भेजते हैं, तुम कल्पना करते हो कि उन्हें यह व्यग्रता रहती है कि जहाज के चूहे सुखी हैं कि नहीं ?"

पेनग्लास ने कहा —"तव क्या करना चाहिए ?"

फकीर ने कहा —"अपना मुंह वन्द रखो ।"

पैनग्लास ने कहा —"संसार में सम्भावित सर्वश्रेष्ठ, पाप का मूल, आत्मा का स्वरूप, और पूर्व-नियोजित समन्वय, आदि का क्या कारण है और क्या प्रभाव है ? इस सन्दर्भ का थोड़ा सा विचार-विनिमय करने की मैं आपसे-अनुमति चाहता था ।"

इन शव्दों को सुनते ही फकीर उठा और उनके सामने ही उसने फटाक से

दरवाजा बन्द कर लिया।

इस सन्दर्भ से फकीर का मन्तव्य है कि इस प्रकार की समग्र आध्यात्मिक चर्चाएं तथ्यहीन और व्यर्थ हैं।

इस समय जब वार्तालाप चल रहा था समाचार आता है कि व्यवस्थापक सभा के दो मंत्रियों और एक न्यायाधीश को कुस्तुनतुनियां में गला दबा कर मार दिया गया है। जैसे ही वे अपने छोटे कृषि-क्षेत्र की ओर जा रहे हैं वे एक वृद्ध किसान को संतरों के वृक्षों के झुरमुट के नीचे अपने दरवाजे पर बैठे ताजी हवा खाता हुआ देखते हैं। वह पूर्ण स्वस्थ, बलवान और प्रसन्न दिखाई पड़ता है। पैनग्लास उससे उस न्यायाधीस का नाम पूछता है, जिसका गला दबाकर मार दिया गया है। वह कहता है कि उसका ध्यान नहीं है और न वह कभी यह चिन्ता करता है कि कुस्तुततुनियां में क्या होता है? "मैं अपने खेत के उत्पादन को वहां बिकने के लिए भेज देता हूं, बस, मेरे लिए यह बहुत है।"

किसान कान्दिदे, पेनग्लास और मार्टिन को अपने घर आमंत्रित करता है, जहां उन्हें सर्वोत्तम स्वल्पाहार दिया जाता है, जैसा उन्होंने पहले कभी देखा भी न था। स्वल्पाहार के अनन्तर किसान की दो पुत्रियों ने उनकी डाढ़ियों को सुवासित कर दिया।

अनन्तर इस अमर संवाद का सुयोग उपस्थित होता है:

कान्दिदे ने तुर्क से कहा —"तुम्हारे पास एक बड़ी रियासत होगी।'

तुर्क ने उत्तर दिया —"केवल बीस एकड़, मेरे बच्चे किसानी करने में मेरी सहायता करते हैं और मैं अनुभव करता हूं कि काम-ऊब, दुर्गुण और निर्धनता-इन तीन बुराइयों को विनष्ट करता है।

जैसे ही वह अपने खेत पर लौटा, कान्दिदे ने तुर्क के कथन पर चिन्तन किया। उसने पेनग्लास और मार्टिन की ओर घूमते हुए कहा:

"जिन छः राजाओं के साथ शाम का भोजन करके हम गौरवान्वित हुए थे उनकी तुलना में मुझे प्रतीत होता है कि इस वृद्ध किसान ने अपना अधिक हित किया है।"

पेनग्लास ने कहा —"बड़ी रियासत आपत्तिजनक होती है, यह प्रत्येक दार्शनिक जानता है।"

कान्दिदे ने कहा — "मैं भी जानता हूं कि हमको खेत में जाना और काम करना चाहिए।"

पेनग्लास ने कहा — "तुम पूर्णतया ठीक हो। जब मनुष्य "स्वर्ग-उद्यान" (Garden of Eden) में नियुक्त हुआ था उससे कहा गया था कि वह उद्यान की काट-छांट और सुरक्षा करे। वस्तुतः काम करना चाहिए, जिससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य केवल

आराम भोगने के लिए नहीं पैदा हुआ था।"

मार्टिन ने कहा — "बिना तर्क किए हमें काम करना चाहिए। यही वह मार्ग है, जिससे जीवन जीने योग्य बनता है।"

ये विवेकपूर्ण शब्द हमारे हृदय-पटल पर लिख लिए जाने योग्य हैं। मार्टिन एक व्यावहारिक मनुष्य है, जो ऐसे वाद-विवाद की उपादेयता समझता है।

महान् मानस विज्ञानी एरिक फ्राम ने मानस विज्ञान और शरीर विज्ञान के अध्ययन द्वारा यह सिद्ध किया है कि लोगों में ऊब और विनाश का सीधा सम्बन्ध है। ऊब सम्भवतः सबसे बुरा दण्ड है, जो किसी को दिया जा सकता है।

मानव एक गड़हा है, जिसमें एक पिशाच रहता है। पिशाच स्वयं (व्यक्ति) में कितनी ही बुरी शक्तियों का सजीव स्वरूप है, जो व्यक्ति को ही नहीं समाज को भी विनष्ट करता है। यह श्रेय काम ही को है कि वह व्यक्ति की रक्षा विनाशशील शक्तियों से करता है। इसलिए काम मानव के लिए स्वतन्त्रता भी है।

जार्ज आरवेल का मार्मिक दृष्टिकोण, अपूर्ण मानव को "स्वतन्त्रता, भोजन (सुअर का मांस) और उचित काम" अधिक मात्रा में मिलना चाहिए, यथार्थतः प्रकाशवान है।

3, काम स्वाभाविक है जैसे खेल या आराम

यह एक सशक्त धारणा है कि लोग काम से घृणा करते हैं और वे यथासाध्य उसकी उपेक्षा करने का प्रयास करते हैं। यह प्रबल भाव से निर्णय कर लिया गया है कि लोग आलसी हैं। किन्तु काम एक स्वाभाविक क्रियाशीलता है। प्रत्येक व्यक्ति काम करने की इच्छा रखता है। इसका कारण सरल है। मानव शरीर की ऐसी जीवन्त व्यवस्था है, जिससे शरीर में जाने वाले भोजन, पानी और हवा संस्कार के रूप में ढल जाते हैं। काम ऐसे संस्कार का प्रमुख स्वरूप है। मानव शरीर कुछ मात्रा में शारीरिक और बौद्धिक शक्ति का सृजन करता है, जिसका श्रेष्ठ उपयोग काम में होता है। इसलिए निकम्मेपन से मानव का मन घुटने लगेगा। एक प्रसिद्ध लेखक ने कहा है :

"तुम पूछते हो···मैं क्यों काम करता रहता हूं। जिस कारण से एक मुर्गी अण्डे देती रहती है, उसी कारण से मैं काम करता रहता हूं।"

इसलिए काम सुख है, सशक्त क्रियाशीलता है। यह मानव शरीर और बुद्धि को प्रेरित करता है।

मानव को कितनी ही मानसिक शक्तियां मिली हैं। वह सोच सकता है। वह याद कर सकता है और ज्ञान की अभिवृद्धि कर सकता है। उसमें कल्पना होती है। वह आन्तरिक शक्ति द्वारा अपने लोगों और समाज की सेवा करने के लिए प्रेरित रहता है। वह स्वयं को समझना चाहता है। वह अपने से बाहर संसार को कुछ अभिव्यक्त करना चाहता है। वह सृजनशील रहना चाहता है। वह असम्भव की उपलब्धि चाहता है। पर्वतारोही जार्ज मल्लोरी ने कहा था कि वह एवरेस्ट पर्वत विजय करना चाहता था, क्योंकि वह आरोहण किए जाने के लिए प्रस्तुत था। काम मनुष्य को आत्म बोध, आत्माभिव्यक्ति, और आत्मोन्नति का सुयोग प्रदान करता है।

कनाडा का एक प्रसिद्ध प्रयोग है, माण्ट्रियल प्राइमरी स्कूल के लगभग छः सौ

विद्यार्थियों को एकाएक कहा गया कि वे कक्षाओं में उपस्थित न होने के लिए स्वतंत्र हैं। उन्हें यह भी सूचित किया गया था कि भविष्य में दुर्व्यवहार के दण्ड स्व-रूप खेलने के लिए क्रीड़ा-क्षेत्र पर उन्हें भेज दिया जायेगा। सब बच्चे खेल के मैदान पर दौड़ गए, पर दो दिन के भीतर वे पूरे तो नहीं पर संख्या में कुछ कम कक्षा में लौट आए। उन्होंने कम नहीं बल्कि पहले की अपेक्षा अच्छा काम किया।

काम एक मुकुर के समान है, जिसमें व्यक्ति अपने यथार्थ स्वरूप को स्पष्ट रूप से देख सकता है। जब व्यक्ति उत्साहपूर्वक काम करता है, इससे उसके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का संकेत मिलता है। काम वास्तव में उसके पिछले संस्कार स्वभाव और उसकी योग्यता, शैक्षिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, उसके उत्साह और उसकी क्षमता को एक केन्द्र पर ले आता है। काम व्यक्ति को अपनी प्रगति और आत्मविकास के निर्धारण के लिए एक स्पष्ट मानदण्ड प्रदान करता है।

संक्षेपतः इसलिए जैसे एक व्यक्ति अपने स्वास्थ्य और अपनी कुशलता के लिए आकृष्ट रहता है वैसे ही उसे उतना ही अपने काम के प्रति आकृष्ट रहना चाहिए।

किन्तु तब इस तथ्य का विवरण कैसे दिया जाय कि लोग काम में पर्याप्त रुचि नहीं लेते हैं। जैसे फर्डिनेण्ड स्वैग ने यह सिद्ध किया है कि जिसे हम आलस्य कहते हैं, वास्तव में वह शक्ति का अभाव है, जो कई कारणों जैसे अस्वस्थता के फलस्वरूप भी हो सकता है। स्वभाव भी प्रमुख प्रभावों में से एक है, जो स्वाभाविक शक्ति को नियमित रखता है। कभी-कभी काम व्यक्तिकी योग्यता और पात्रता के अनुकूल नहीं होता है। काम थकाने वाला और प्रेरणाहीन भी हो सकता है या काम का वातावरण इस आशय में विलोम भी हो सकता है कि वह क्रियाशीलता के लिए पर्याप्त साधन प्रस्तुत नहीं करता है, जिससे काम असुविधाजनक प्रतीत होने लगता है। मजदूरी और वेतन के सन्दर्भ में भी वास्तविक शिकायत हो सकती है। सामाजिक और सांस्कृतिक तत्व जैसे मजदूर संघ की नीतियां, धार्मिक विश्वास भी काम की प्रवृत्ति को मोड़ते हैं। ऋतु भी काम करने की क्षमता को विशेषरूपेण प्रभावित करती है। एक महान् विद्वान लेखक ई. हण्टिंगटन का कथन है कि बौद्धिक रुचि अन्ततः भौगोलिक तत्वों पर आश्रित है।

पर मानव स्वतंत्र है और वह काम करने की स्वाभाविक शक्ति के मार्ग में बाधा प्रस्तुत करने वाले अवरोधों पर विजय प्राप्त कर सकता है। सामाजिक संस्थानों का यह अनिवार्य कर्तव्य है कि वे स्वाभाविक शक्ति को उचित रूप से निर्माणशील कार्यों में लगाने के लिए आश्वस्त करें। आज का संसार काम करने की रुचि में क्रमशः अभाव का अनुभव कर रहा है, जो बहुल रूप से व्यक्ति और समाज के लिए आपत्ति का आमंत्रण है।

4. काम से आराम है

टेनिसन द्वारा रचित "लोटस ईटर्स" (Lotus Eaters) का कथन है :

"मृत्यु जीवन का अन्त है, आह, जीवन भर परिश्रम क्यों हो।"

अतीत काल से मनुष्यों द्वारा इस विचारधारा का समर्थन हुआ है और कई प्रसिद्ध चिन्तक आराम के पन्थ के प्रस्तावक हैं। वे कहते हैं कि जब मानव अधिकाधिक आराम भोग चुका होता है वह सुखी, परोपकारी और क्रियाशील हो सकता है। उनके अनुसार काम अभिशाप है। मनुष्य केवल खेल में स्वतंत्र और सक्रिय हो सकता है। वह जब काम करने की भावना से मुक्त होता है वह केवल तभी अपना विकास कर पाता है। कार्ल मार्क्स के जामाता पाल लफार्ग ने 'आलसी होने का अधिकार' संज्ञक एक रोषपूर्ण निबन्ध लिखा था, जिसमें उसने कहा था : "कलाओं और अच्छे गुणों के जन्मदाता, हे आलस, तू मानव जाति की व्यथाओं का हरण करने वाला उपचार हो जा।"

पर कार्ल मार्क्स के विरोधी विचार थे। उनके अनुसार काम मानवीय शक्ति की सार्थक अभिव्यक्ति है, जो मानव के सुखोपभोग का प्रमुख साधन है। "केवल निर्माण में सक्रिय होने से ही मानव जीवन को सार्थक बना सकता है।"

"उद्योगीकरण और उद्योगी मानव" संज्ञक विषय के विद्वान लेखकों ने उनका मार्मिक और व्यापक अध्ययन प्रस्तुत कर यह मन्तव्य प्रकट किया था कि मानव अपने काम में अधिकाधिक परवश रहेगा, इससे वह व्यग्र रहेगा, पर खेल में उसे अधिकाधिक मनोकामनाओं की पूर्ति और आनन्द मिलेगा। "आराम के क्षणों में ही व्यक्तियों के जीवन में महान नूतन स्वतंत्रता आ सकती है।···स्वतंत्र जीव के लिए आराम में ही सुख की उपलब्धि होगी।"

पर यह असन्दिग्धरूप से एक भ्रान्ति है। आराम का समर्थन कई कारणों से भटकने वाला है, जिसके फलस्वरूप काम की महत्ता उपेक्षित हो उठती है। एक मनुष्य फैक्ट्री में गुलाम और घर में स्वतंत्र नहीं रह सकता है। यदि वह अपने काम के क्षणों में अप्रसन्न और चिन्तायुक्त है तो वह आराम के समय में हँसी-खुशी और आनन्द से युक्त नहीं रह सकता है। फर्डिनण्ड स्वैग ने ठीक कहा है : "व्यक्ति घर

में एक और काम में दूसरा नहीं हो सकता है, वह एक वही आदमी है। वह अपनी व्यक्तिगत बाधाओं, चिन्ताओं और संकटों को अपने कर्म-क्षेत्र में साक्षात्कार करता है और फिर अपने कर्म-क्षेत्र से अपने घर ले जाता है।"

डेविड रीजमन का एक समय का विश्वास था कि जीवन की सार्थकता आराम के सक्रिय उपयोग में खोजना चाहिए। अब उसने अपने इस विचार का परित्याग कर दिया है, वह अब इस इस अनुभूति पर पहुँचा है कि एक निश्चित मात्रा से अधिक आराम सन्तुष्ट करने की तुलना में अधिक निष्क्रिय बना देता है और सिद्ध करता है कि अपरिमित आराम को व्यक्ति व्यवस्थित नहीं कर पाता है। अपरिमित आराम जीवन को दुर्गुण-युक्त कर देता है और वह आत्म-निग्रह खो बैठता है। आराम शराब और संयोग अथवा भाग्य के खिलवाड़ सम्बन्धी सभी प्रकार की उत्तेजनाओं के स्वरूप को धारण कर लेता है। आराम इस प्रकार मानव को अमानव की स्थिति में ले आता है। यह आत्मिक और भावात्मक रूपों से उनको विनष्ट कर देता है।

और यदि प्रत्येक व्यक्ति यह सोचने लगता है कि वह अपने नित्य-प्रति के काम को यथासाध्य उपेक्षित रखे, या करे भी तो बिना दायित्व के, इस स्थिति में हमारा आर्थिक और सामाजिक जीवन अनिवार्य रूप से अस्त-व्यस्त हो जाएगा। यह साधारणतय उथल-पुथल की स्थिति होगी। आराम सम्बन्धी आनन्दोपभोग के प्रसंग में यह पूर्व-कल्पित विचार रहता है कि सब सुख और सुविधाएं, जो आधुनिक संसार दे सकता है, सदैव प्राप्य हैं। उदाहरण के लिए, यदि ग्वाला प्रातःकाल नहीं आता है, रेलगाड़ियां समय पर नहीं आती-जाती हैं और डाकिया नियमित रूप से डाक नही बांटता है—बतलाइए, इन स्थितियों में व्यक्ति आराम का उपभोग कैसे कर सकता है ?

और अधिक मुख्य बात यह है कि पर्याप्त और थकाने वाले काम के बिना वास्तविक आराम नहीं हो सकता। जैसा बरनार्ड कर्श ने कहा है, "काम जीवन का अंग नहीं है, यह शाब्दिक रूप से जीवन ही है।" क्योंकि काम ही हमारे जीवन को ढालता है। यह हमारे क्रियाकलापों की नींव रखता है साथ ही उनका ढांचा भी प्रदान करता है। मात्र यह मानवीय अस्तित्व की सुव्यवस्था के लिए दिशा और अनुशासन प्रदान कर सकता है। मात्र यह हमारे जीवन के अंग-प्रत्यंगों के यंत्रों को परिचालित कर सकता है।

काम और आराम का परस्पर सम्बन्ध अधिकांशतः मिश्र और मनोरंजक है। आराम की प्रकृति काम की सघनता के आश्रित है, जो उसके बाद आती है। जितना यथार्थतः अधिक काम होता है उतना ही उसके बाद रुचिकर और सन्तोषप्रद आराम होता है। बर्ट्रेण्ड रसेल युवावस्था में भी छुट्टियों का उपयोग टहलने में किया करते थे। वह चालीस मील प्रत्येक दिन टहलते थे। उनका कथन है कि दिन

की समाप्ति पर वैठने और विश्राम लेने में ही आनन्द मिलता था। उसके लिए अन्य किसी साधन की आवश्यकता ही न होती थी।

यदि व्यक्ति आराम का आनन्द भोगना चाहता है तो प्रभावी काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। एक व्यक्ति, जो दिन-प्रतिदिन दैनिक और नैमित्तिक काम उत्तरदायित्व और मनोयोग पूर्वक करता है, सन्तोषप्रद आराम से पुरस्कृत होता है। वह गहन निद्रा में सोता है, जब कि आलसी निद्रा के अभाव में कष्ट उठाता है।

वीसवीं शताब्दी का महान दार्शनिक विटगेनस्टीन अपने भाषणों के द्वारा पूर्ण रूप से थक जाया करता करता था। "वह वेगपूर्वक गाड़ी चलाकर ले जाता था। उसका सारा शरीर तनाव-ग्रस्त हो जाता था।" भाषणोपरान्त वह तत्काल ही मीठी टिकियां या मांस के समोसे खरीदकर चलचित्र गृह के लिए दौड़ जाया करता था और प्रथम पंक्ति की सीट पर वैठ कर चलचित्र देखता हुआ उनको चपर-चपर खाया करता था। वह चलचित्र देखने में निमग्न हो जाता था, भले ही वह निम्न और साधारण कोटि का ही हो। वह कहा करता था, "(चलचित्र का देखना) यह फौहारे के स्नान के समान (सुखद) है।"

5. काम का स्वरूप

मनुष्य का व्यक्तित्व अधिकांशतः समाज के द्वारा निर्मित होता है। उसकी प्रवृत्तियाँ, भाषा, आकांक्षाएं स्वभाव, ज्ञान और गुण सभी सामाजिक वातावरण के सांचे में ढलते हैं। प्रसिद्ध मानस शास्त्री आर. डी. लेइंग ने कहा है : "बिना सामाजिकता के एक व्यक्ति का व्यक्तित्व नहीं रह सकता है। तुम व्यक्ति को सामाजिक प्रकरण से बाहर नहीं ले जा सकते हो, उसको व्यक्ति के समान ही देखो या व्यक्ति के समान उसके प्रति व्यवहार करो।"

काम के संसार में मनुष्य पर सामाजिक सम्पर्क का सूक्ष्मतम प्रभाव पड़ता है, जिससे उसका काम स्पष्ट और यथार्थ होता है। इस सन्दर्भ में फ्राइड ने कहा है, अपने काम में व्यक्ति यथार्थ के एक भाग से सुरक्षित रूप से जुड़ा रहता है, जो मानव समुदाय से सम्बद्ध होता है। काम के बिना एक व्यक्ति मात्र अकेला रह जाता है, जिसका स्तर होता है और न गौरव। उसका जीवन निरर्थक और उद्देश्य-हीन प्रदर्शित होता है।

व्यक्ति का व्यक्तित्व जिस समाज में रहता है, उसको प्रदर्शित करता है। उदाहरण के लिए, भाषा पर विचार कीजिए, जो मानव का अद्वितीय और सबसे मूल्यवान उपहार कहा जाता है। ममफोर्ड ने इसे संस्कृति का महान समन्वित रखने वाला कहा है। सामाजिक साधनों में भाषा सबसे अधिक आवश्यक है। और समाज के बिना भाषा और भाषा के बिना संस्कृति नहीं रह सकती है। अन्यथा मानव को पशुओं से अलग करने का साधन न रह जाएगा।

प्रत्येक व्यक्ति सदैव मित्रों और साहचर्य की आकांक्षा रखता है। साहचर्य की खोज सनातन और विश्वव्यापी है, जो बहुत गहरी होती है और जिसकी अत्य-धिक आवश्यकता भी समझी जाती है। काम इस आवश्यकता को भी पूर्ण करता है। कारखानों और कार्यालयों में काम सामाजिक क्रिया कलापों को प्रोत्साहित करता है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति काम करने वाले छोटे वर्ग का एक सदस्य होता है। उसमें निरन्तर मित्रों के छोटे वर्ग का स्वरूप रहता है। यहाँ एक सामुदायिक वातावरण रहता है, जो काम और उसके निरीक्षकों के प्रति काम करने वालों की

प्रवृत्ति को निर्मित करता है। औद्योगिक विश्व के सूक्ष्म प्रेक्षक फर्डिनण्ड स्वेग का कथन है : "साहचर्य मानवता का मुख्य साधन है और हम उसी मात्रा तक मानव हैं, जिस मात्रा तक हम परस्पर साहचर्य रखते हैं।" एक काम करने वाला व्यक्ति प्रेम करना चाहता है और वह चाहता है कि अन्य उसके प्रति प्रेम करें। वह चाहता है कि अन्य उसकी सहायता करें और वह स्वयं भी दूसरों की सहायता करना चाहता है। जब वह दूसरों की सहायता करता है वह प्रसन्न हो जाता है। स्वेग ने चार्ल्स कोरव की एक बढ़िया चित्रकारी का एक सुन्दर दृष्टान्त प्रस्तुत किया है "भिक्षा देने वाला भिखारी" (1808), जिसमें एक अत्यंत वृद्ध और कृश भिखारी,, जो अपनी टांगों पर खड़ा भी होने योग्य नहीं है, एक पुष्ट सबल किशोर भिखारी को भीख देता है। उसकी मुखाकृति आन्तरिक चमक से दीप्तिमान है, जैसे वह कहता है, "मैं भी दूसरों की सहायता कर सकता हूं।"

जब एक व्यक्ति सेवा-निवृत्त हो जाता है, उसे काम करने के विधि-विधान, काम करने की पद्धतियां और संख्याएं शीघ्र ही विस्मृत हो जाती हैं। उसके स्मरण में रह जाते हैं, मात्र मानव सम्पर्क, सामाजिक वातावरण और सामाजिक साहचर्य। एक फर्म के व्यवस्थापक निदेशक ने एक बार कहा था "मेरे लिए वार्षिक विवरण मत भेजो, बिक्री में अब मेरी कोई रुचि नहीं रह गई है, गपशप के विवरण भेजो, व्यक्तियों से मेरा सम्पर्क छूट गया है, जिससे मेरा जीवन दूभर हो गया है।"

नीचे की तीन घटनाओं के अध्ययन से मानव और उसके काम सम्बन्धी विविध पक्ष प्रकट होते हैं :

(1) एक महिला अधिकारिणी

बाईस वर्ष की एक युवती ने एक शल्य शास्त्री के यहां कम वेतन पर एक अधिकारिणी (लेखिका) की नौकरी स्वीकार की थी। यद्यपि काम की शर्तें बहुत साधारण हैं, फिर भी वह काम पसन्द करती है। क्योंकि उसका कथन है :

"मैं लोगों से सम्पर्क रखना चाहती थी।"

"मैं अनुभव करती हूं कि आवश्यक काम कर रही हूं।"

"एक प्रातः एक तीस वर्षीय स्त्री छः बच्चों के साथ भीतर आती है—वह प्रसन्न मुद्रा में मुझे नमस्कार करती है और मैं जो उसकी सहायता कर सकी थी उसके लिए वह मेरे प्रति आभार प्रकट करती है, यह मेरी नौकरी के प्रतिफलों का एक भाग है।"

"नौकरी के प्रमुख आकर्षणों में मेरे लिए एक यह है कि मैं अनुभव करती हूं मैं भी अधिकारिणी हूं, मेरी भी महत्ता है।"

"चार वर्ष मैंने शल्य शास्त्री के यहां नौकरी की पर नौकरी पर आने में मुझे कभी विलम्ब नहीं हुआ। यधपि अपनी पिछली नौकरियों में मैं कभी समय पर

नहीं पहुंची थी।"

"मकानों के मूल्यों की तुलना सम्बन्धी काम में अपनी रुचि लगाना मेरे लिए कठिन हो गया था। मैं अब अनुभव करती हूं कि मैं अपने इस काम में अधिक मात्रा में निमग्न हूं। मूल्यांकन की अपेक्षा शल्य सम्बन्धी स्थितियां मुझे कहीं अधिक रुचिकर हैं। (वह पिछली नौकरी में व्यय सम्बन्धी परीक्षण करने वाली एक फर्म में नौकर थी।)

इसके द्वारा यह तथ्य स्पष्ट होता है कि नौकरी के प्रति सन्तोष कई तथ्यों पर आधारित है और काम के प्रति रुचि लेने का साधन मात्र वेतन नहीं है।

(२) एक बूचड़खाने की छः लड़कियां

छः लड़कियां एक बड़े शहर में एक बूचड़खाने में काम कर रही थीं। कटे हुए सुअरों के भीतर के अंगों और अन्तड़ियों को साफ करने का उनका काम अधिक आनन्दप्रद नहीं था। काम का स्थान भी घिनौना था। उन्हें घर के निचले भाग में काम करना पड़ता था, जो सदैव ठण्डा, नम और असुविधाजनक था। फर्श खून और सुअरों की अन्तड़ियों से ढका रहता था। निचला भाग दुर्गन्धयुक्त था। एक नया डाक्टर इस दृश्य को देखकर भयभीत हो गया। उसने आदेश दिया कि इन युवतियों को कहीं अन्यत्र अच्छा काम दिया जाए। व्यवस्थापकों को इस आदेश का पालन करना पड़ा और स्वच्छ काम करने के लिए उन्हें स्थान्तरित कर दिया गया।

पर लड़कियों ने विरोध किया। उन्होंने आख्या मांगी कि उन्हें क्यों स्थान्तरित किया गया, जब कि वे अच्छे ढंग से अपना काम कर रही थीं। उनका, विरोध इतना दृढ़ और आग्रह भरा था कि व्यवस्थापकों को अपना आदेश वापिस लेना पड़ा।

लड़कियों को अपने गन्दे काम के प्रति कई कारणों से प्रेम था। सर्वप्रथम, उन्होंने काम करने वालों का एक सुखद वर्ग बना लिया था। वे घनिष्ट मित्र हो गई थीं। काम करती हुई सारे दिन वे बातें करती रहतीं, गाती रहतीं, कहानियां कहती रहतीं, और गपशप, चित्रों और फैशन के सम्बन्ध में वाद-विवाद करती रहती थीं। वहां का सामाजिक वातावरण इतना लुभावना था कि काम करने की निकृष्ट दशाओं की और उनका ध्यान ही नहीं था। द्वितीय, उन्हें अपने काम के प्रति बड़ा गर्व था, जिसे वे बड़ा चातुर्यपूर्ण समझती थीं। तृतीय, उनका निरीक्षक एक आदर्श निरीक्षक था, जिसने उन पर कभी अनुशासन नहीं रखा। जब कभी लड़कियां अच्छा काम करती थीं, वह न्यायतः उनकी प्रशंसा करता था। यदि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाइयां आ जाती थीं, वह तत्काल ही उनका मार्ग प्रदर्शन और सहायता करता था। एक आशय से वह उनका गुरु था। वे उसकी

प्रशंसा और सम्मान किया करती थीं।

(3) तीन संगतराश

तीन संगतराश एक मन्दिर का निर्माण कर रहे थे। उनसे पूछा गया कि वे क्या कर रहे हैं?

प्रथम संगतराश ने कहा—"मैं एक निर्धन व्यक्ति हूं। मुझे अपने परिवार का भरण-पोषण करना पड़ता है। मैं यहां अपनी जीविका कमा रहा हूं।"

द्वितीय ने गर्व प्रदर्शित करते हुए कहा—"अच्छा, मैं काम करता हूं, क्योंकि मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि मैं देश का एक प्रसिद्ध संगतराश हूं।"

तृतीय ने अपने नेत्रों में काल्पनिक चमक भरकर कहा—"मुझे देश में सबसे सुन्दर मन्दिर बनाना है।"

उनके काम समान हैं, किन्तु उनके दृष्टिकोणों में पर्याप्त अन्तर है। मेरा काम सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, यह अनुभूति सर्वोच्च है। वस्तुतः यह सन्तुष्ट जीवन और सच्ची महान सभ्यता का आधार भी है। एक आदर्श सभ्यता में सभी काम आनन्द और पूर्ण मनोयोग के साथ किए जावेंगे। वर्तमान काल में बहुत लोग अभाव की भावना से दुखी हैं, यह भावना कि उनके अस्तित्व का कोई मूल्य नहीं है। उनकी निरर्थकता की भावना पूर्णरूप से एकाकीपन ला रही है। आवश्यक यह है कि व्यक्ति अपने काम में गर्व की भावना को विकसित करे। इससे व्यक्ति आत्मसम्मान सुरक्षित रखने के योग्य होता है और अपने व्यक्तित्व की रक्षा करता है।

6. सहकारिता काम में जुटाती है

लोग क्यों काम करते हैं और कब श्रेष्ठ काम करते हैं, बड़े कठिन प्रश्न हैं। हादर्न के अनुसन्धानों का प्रयोजन इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए ही था, ये अनुसन्धान 1927 से 1932 ई० के मध्य सम्पन्न हुए थे। अमेरिका में शिकागो के समीप हादर्न के कारखाने ने लगभग तीस हजार कर्मचारी नियुक्त किए थे। औद्योगिक संघर्ष के कारण उन दिनों निरन्तर संघर्ष होते रहते थे। ये अनुसन्धान प्रोफेसर एल्टन मेयो और उनके सहयोगियों द्वारा चलाए गए थे और वे औद्योगिक समाज शास्त्र के मध्य में श्रेष्ठ उपलब्धियों के रूप में परिगणित हैं।

'सहक्षेपण मिलन के परीक्षण कक्ष का प्रथम प्रयोग' (The First Pelay Assembly Test Room Experiment) सबसे अधिक उल्लेखनीय प्रयोग है, जिसका सम्बन्ध उत्पादन वर्ग की पांच लड़कियों से था, जो टेलीफोन का छोटा अवयव निर्माण करती थीं। यहां हमारा सम्बन्ध प्रयोग के प्रथम अध्याय से है, जो 1927 ई. से 1929 ई. तक चला था। यह जानने के लिए कई परिवर्तन किए गए थे कि वे कौन तत्व हैं, जिनसे सामुदायिक उत्पादन प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, काम करने के घण्टे कम कर दिए गए थे और बीच में अतिरिक्त विश्राम करने की अनुमति दे दी गई थी। काम में खण्ड-पद्धति को आरम्भ कर दिया गया था। कारखाना मध्याह्न का निशुल्क भोजन भी देने लगा था और पांच दिनों का सप्ताह भी प्रारम्भ कर दिया था। प्रयोग की अन्तिम स्थिति में सभी सुविधाएं बन्द कर देने का नाटक भी किया गया। फिर भी समग्र आशाओं के विरुद्ध यह आश्चर्यजनक सिद्ध हुआ कि न कोई संघर्ष हुआ और न कोई ऊधम, किन्तु उत्पादन में अभिवृद्धि हुई। वास्तव में उत्पादन का एक नया स्तर संस्थापित हो गया था।

इस प्रयोग के तथ्य दूर तक प्रभावकारी हैं। उत्पादन का सम्बन्ध धन के आश्रित है, यह विचारधारा सदैव-सदैव के लिए विनष्ट हो गई। परिणामतः यह प्रकट हो गया कि मानवीय आवश्यकताएं मिश्रित और अलग-अलग हैं। काम एक सामाजिक क्रियाशीलता है और उससे जुड़े रहने की भावना विशेष महत्वपूर्ण है। मनुष्य प्रसिद्धि, प्रशंसा और प्रतिष्ठा की कामना रखता है। लड़कियां प्रयोग के

साथ स्वयं प्रसिद्ध हो गईं। उन्हें इस वस्तुस्थिति से अत्यधिक गर्व हुआ कि उनका काम लब्ध प्रसिद्ध प्रोफेसरों के अनुसन्धान का विषय बना था। काम सम्बन्धी नियमित सूची में परिवर्तनों के लिए उनका निरन्तर अभिमत लिया गया था। इस प्रकार प्रयोग के स्वरूप में उनका सन्निवेश एक श्रेष्ठ सुयोग था। ये स्थितियां इस तथ्य के सन्दर्भ में विवरण प्रस्तुत करती हैं कि दी हुई सुविधाओं के अभाव में भी उनके उत्पादन पर विरोधी प्रभाव न पड़ा। दूसरी ओर लड़कियां यह तथ्य भी संस्थापित करना चाहती थीं कि वे क्षुद्र सुविधाओं के लिए काम नहीं कर रही थीं। योजना और काम-सम्पादन में सहयोग बहुत अधिक प्रेरक हो सकता है।

मैयो एक उल्लेखनीय सहृदय और उत्साही व्यक्ति थे, जिन्होंने उद्योग में मानवीय सम्बन्धों के क्षेत्र में किसी व्यक्ति की तुलना में अधिक अनुसन्धान किए थे। उन्होंने दादर्न के अधिकारियों के साथ श्रेष्ठ सम्बन्ध स्थापित किए थे। मानव के सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए उनमें विवेक था। मैयो का यह गुण था कि वह कार्याधिकारियों को भोजन के लिए देश के क्लब में ले जाने की परम्परा के विरुद्ध रसीले प्याज के प्याले के लिए भोजनकक्ष में ले गए थे।

प्रत्येक व्यक्ति कर्मचारियों के वर्ग का एक महत्वपूर्ण सदस्य बनना चाहता है और इस मार्मिक अनुभूति की आवश्यकता की पूर्ति केवल काम की व्यवस्था में सहकारी बनने से ही हो सकती है।

7. आराम काम को समृद्ध करता है

(1) रसेल की विधि

बर्ट्रेण्ड रसेल बीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े दार्शनिक विद्वान हैं। यह कहा जाता है कि उनकी बुद्धि प्रकाश की गति के साथ काम करती थी। वह अत्यधिक विचित्र काम करने वाले थे। गणित विषयक तर्क और दर्शन जैसे गूढ़ क्षेत्रों में बौद्धिक काम के लिए उनकी क्षमता तीव्र, एकाग्र और स्थिर थी। गणित के सिद्धान्त (The Principles of Mathmatics) संज्ञक पांच सौ पृष्ठ की पुस्तक उन्होंने चार महीने में लिख डाली थी, जो उनकी स्मरणीय उपलब्धि है।

प्रथम कोटि के दार्शनिक कार्ल पॉप्पर ने इस उपलब्धि के सन्दर्भ में स्पष्ट उल्लेख किया है :

"मैं विश्वास करता हूं कि यह(The Principles of Mathmatics) श्रेष्ठ और आश्चर्य में डालने वाली पुस्तकों में से एक है। इसके इतिहास का विश्वास कठिन है। वह जुलाई 1900 ई. में पेरिस कांग्रेस में गए थे, जिसमें पिआनो से उनकी भेंट हुई थी, उनसे वह प्रभावित भी हुए थे, इससे पहले गणित के गम्भीर दर्शन का उन्हें ज्ञान नहीं था। पिआनो ने उन्हें अपनी सब रचनाएं प्रदान कीं। उन्होंने उन सभी को अगस्त में पढ़ डाला, यह एक सनक जैसा प्रयास था (यदि ऐसे काम के लिए मैंने प्रयास किया होता तो मैं पागल हो जाता)। सितम्बर में उन्होंने सम्पर्क के तर्क पर एक मौलिक निबन्ध लिखा था, जो पिआनो की पत्रिका में छपा था। अक्टूबर में उन्होंने "गणित के सिद्धान्त" (The Principles of Mathmatics) को लिखना आरम्भ किया था और 31 दिसम्बर को इस महान् रचना का प्रथम लेखन पूर्ण हुआ। इसके चार भाग (तीन वर्ष बाद) ठीक जैसे लिखे गए थे वैसे वे छप गए थे, जबकि तीन भाग (एक, दो और सात) फिर लिखे गए थे। मेरे ध्यान में नहीं आता है कि ठीक इस प्रकार की चीज दर्शन या साहित्य के इतिहास में घटित हुई हो। पुस्तक की उपलब्धि अद्वितीय है।

और नब्बे वर्ष की अवस्था पर भी रसेल असाधारण क्षमता से काम करते रहे थे। उन्होंने एक सम्वाददाता को जो उनकी दिनचर्या जानने के लिए उत्सुक था उसे

इस प्रकार स्पष्ट किया था :

"प्रातः 8 बजे से 11-30 बजे तक मैं पत्रों और समाचार-पत्रों को निबटाता हूं। औसत रूप से सौ पत्र मुझे नित्य प्राप्त होते हैं। 11-30 बजे से 1 बजे अपराह्न तक मैं लोगों से भेंट करता हूं। 3 से 4 बजे अपराह्न तक मैं मुख्यतः अणु सम्बन्धी रचनाओं को पढ़ता हूं। 4 बजे से 7 बजे अपराह्न तक मैं लिखता हूं। 8 बजे से 1 बजे प्रातः तक मैं पढ़ता हूं या लिखता हूं।"

किन्तु रसेल ने "आलस्य की प्रशंसा में" एक मनोरंजक और विचारोत्तेजक निवन्ध लिखा था। इस पुस्तक में वह नेपल्स में एक यात्री का उल्लेख करते हैं, जिसने बारह भिखारियों को धूप में पड़े देखा था। उसने उनमें सबसे बड़े आलसी को पुरस्कार स्वरूप एक लिरा देने का प्रस्ताव किया था। (यह सुनते ही) उनमें ग्यारह तत्काल ही उठ खड़े हुए। इसलिए उसने वह पुरस्कार बारहवें को दे दिया।

इस निवन्ध में रसेल का विचार संक्षेपतः इस प्रकार है। चार घण्टे के काम से एक व्यक्ति को अपनी जीविका-वृत्ति कमाने के योग्य हो जाना चाहिए। शेष समय सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे काव्य और संगीत के आनन्द लेने में लगाना चाहिए। यह समय निरर्थक कामों में अपव्यय न हो। ताश खेलने की तुलना में संगीत के आनन्द को अच्छा समझना चाहिए। रसेल का जो समर्थन है वह यह है कि भौतिक सुखों की तुलना में सांस्कृतिक अभिरुचियों को पसन्द करना चाहिए। आज के भौतिक सुखों की सनक अनुचित है। आराम का विवेकपूर्ण उपयोग संस्कृति और शिक्षा के आश्रित है। रसेल ने विचारा तक न होगा कि आराम का स्थूल रूप से इस प्रकार दुरुपयोग होगा। रसेल ने स्वयं आराम के उपयोग की कला को बुद्धिमानी और सृजनशीलता द्वारा पूर्णता प्रदान की थी। उन्होंने अनुभव किया था कि अच्छे काम के लिए अर्द्ध चेतन सम्बन्धी अवधि की आवश्यकता होती है, जिससे विचार उसके भीतर जन्मते हैं और तत्सम्बधी समाधान उस अवधि में पूर्ण स्पष्टता के साथ प्रकट हो जाते हैं। यह वह पद्धति है जिसको वह "स्मरण के चित्र" (Portraits From Memory) में वर्णन करते हैं—

मैंने बोस्टन में "लोवेल भाषण" देना स्वीकार कर लिया था और विषय के लिए मैंने "वाह्य संसार का अपना ज्ञान" को चुना था। 1913 ई. के वर्ष भर में इस विषय पर सोचता रहा। सत्र के अन्तराल में कैम्ब्रिज के अपने कमरों में, छुट्टियों में टेम्स नदी के ऊपरी भाग के शान्त धर्मशाला में इस विषय के स्पष्टीकरण के लिए ऐसी गम्भीरता के साथ मैं एकाग्र मन हो जाता था कि कभी मैं श्वांस लेना भी भूल जाता था या हाँफने लगता था जैसे समाधि से उठा हूँ। पर ये सब उपयोगी सिद्ध न हुए। प्रत्येक सिद्धान्त जो मैं सोच सकता था उसमें मुझे बाधक आक्षेप दृष्टिगोचर होते थे। अन्त में निराश होकर बड़े दिन की छुट्टियों में इस आशय से

9310

रोम गया कि अवकाश में मेरी क्षयशील शक्ति पुनः प्राप्त हो जायेगी। मैं 1913 ई. के अन्तिम दिन कैम्ब्रिज लौट आया। यद्यपि मेरी कठिनाइयों का तब भी पूर्ण समाधान न हो पाया था, क्योंकि समय कम था, इससे मैंने आशुलिपिका को बोल-कर लिखाने की व्यवस्था की। दूसरी प्रातः जैसे ही वह भीतर आने के लिए द्वार पर आई मुझे ठीक-ठीक ज्ञान हो गया, जो मुझे कहना था और फिर एक क्षण की भी बिना हिचकिचाहट के पूर्ण पुस्तक बोलकर लिखाने के लिए अग्रसर हो गया।"

अधिक काम करने और थकान की स्थिति में यदि व्यक्ति प्रतिकूल निर्णय ले लें तो काम सरलता से बिगड़ भी सकता है। विद्वान् इतिहासज्ञ बगहाट ने यह गुप्त संकेत किया है कि वह लन्दन में ऐसे व्यक्तियों को जानता है जो दिन में आठ घण्टे काम करने के कारण निर्धन हो गए थे, यदि उन्होंने मात्र चार घण्टे काम किया होता तो वे अमीर हो जाते। यह गम्भीर और सरल निर्णय है।

(2) आइन्स्टीन का गुर

आइन्स्टीन का समीकरण ई = एम सी² ($E = MC^2$)अब विश्वविख्यात है। (इसका अर्थ यह है कि निर्माण होने वाली ऊर्जा (E) विनाश होने वाले वस्तुमान (M) और प्रकाश की गति के वर्ग (c^2) के गुणा के बराबर रहता है। उन्होंने इसी प्रकार के दूसरे गुर का भी प्रतिपादन किया है, जिसका समान रूप से तात्कालिक परिणाम मिलता है।

ए = एक्स + वाई + ज़ैड

जहाँ ए = सफलता

एक्स = श्रम साध्य कार्य

वाई = खेल

ज़ैड = अपना मुँह बन्द रखना

जैसा हम संकेत कर चुके हैं कि काम वैसा ही स्वाभाविक है जैसा खेल या आराम और दोनों समान रूप से आवश्यक हैं। उदाहरण के लिए, किसी देश का प्रधान मन्त्री घोर परिश्रमी होता है, जिसे दिन और दिन के बाद भी कठोर काम के दवाब को सहन करना पड़ता है। इंगलैण्ड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री हैराल्ड विल्सन के अनुसार सफल प्रधान मंत्री के लिए उसकी आवश्यकताओं में नींद भी एक है। उनका कथन है :

"मुझे विश्वास है कि रात में आठ घण्टे की अच्छी नींद भोगने की योग्यता प्रधान मंत्री की पूंजी है। एक राज्याधिकारी जो सो नहीं सकता है अच्छा नहीं बन सकता है। मुझे स्मरण है कि यहां लार्ड रोजबरी एक प्रसिद्ध प्रधान मंत्री थे, जो अपने दो वर्ष के मंत्रित्व काल में सो नहीं सके थे। इसलिए ही उन्हें चला जाना पड़ा था।"

और "मौन स्वर्णिम है" एक लोकोक्ति है, गांधी जी धार्मिक दृष्टि से मौन रहा करते थे। मौन व्यक्ति को गम्भीरता से सोचने के लिए प्रेरित करता है। इसमें व्यक्ति की पूर्णता सुरक्षित रहती है और उसकी ईमानदारी को बल मिलता है।

(3) टायन्बी की औषधि

अरनाल्ड टॉयन्वी के अपने काम में भले ही गहन पाण्डित्य का अभाव हो, फिर भी बीसवीं शताब्दी के ऐतिहासिक चिन्तन में उन्होंने अपने सुनिश्चित पद-चिह्न छोड़े हैं। असन्दिग्ध रूप से उनका ठोस अध्ययन था और उनकी अभिरुचियों की व्यापक सीमाएं थीं और किए हुए काम के सन्दर्भ में उनकी सर्वोपरि क्षमता एक सरल कीर्तिमान है। उनकी महान् सफलताएं अविराम अभ्यास और दृढ़ता के फल-स्वरूप रही हैं। उनका आदर्श वाक्य था—"सफलता ? इसके लिए पसीना बहाना चाहिए। देवताओं ने पसीने को काम का मुख्य साधन बनाया है।"

टॉयन्बी ने बुद्धिवादियों के लिए अभिमत स्वरूप निम्नांकित पांच अंश दिए हैं:

(1) अपने को ज्ञान के अन्ध विश्वास में मत डालो, काम करने के पहले सोचो, अपने को समय दो, सर्वप्रथम समग्ररूप से अपने विषय और समस्या पर विचार करो।

(2) जैसे ही तुम समझो कि तुम्हारी बुद्धि ने काम समझ लिया है, तत्काल ही उसको करने में लग जाओ। अपने ज्ञान के अन्ध विश्वास से काम करने के लिए कूद पड़ने की अपेक्षा दीर्घकाल की प्रतीक्षा से काम के प्रतिकूल परिणाम होंगे।

(3) दिन के जिस समय भी तुम यह समझो कि तुम अच्छा लिख सकते हो, दिन में और दिन के बाद भी लिखो। नियमित रूप से लिखो। उस समय की प्रतीक्षा मत करो जब तुम यह अनुभव करो कि लिखने के लिए तुम्हारी चित्त-वृत्तियां अनुकूल हैं।

(4) अनियमित होकर अपना समय नष्ट मत करो। अपने लिए मत कहो— "मैंने यह काम समाप्त कर लिया है, अन्य काम वास्तव में कल प्रातः या सप्ताहांत के अन्त तक करना उचित होगा। जहाँ तक आज के शेष समय और सप्ताह के शेष दिनों की बात है मैं विश्राम कर सकता हूं और कामों को सहज भाव से ले सकता हूं।" उनका सरल अभिमत है: यदि एक काम पूरा हो गया है, तो अपना दूसरा काम तत्काल ही आरम्भ कर दो।

(5) सदैव आगे की ओर देखो, दूर आगे तक देखो, जैसे दौड़ में भाग लेने वाला मोटर-वाहक अपने दूरवीक्षक यंत्र से क्षितिज पर दूर के द्रश्य देखता है, जहां

उसे पहुंचना है।

टॉयन्वी एक सच्चे कर्म-योगी थे, जब कभी वह यात्रा पर होते थे "भगवद्-गीता" की एक प्रति सदैव अपनी जेब में ले जाते थे। उनकी स्मरण-शक्ति विलक्षण थी, पर वह टिप्पणियां व्यवस्थित रूप से अपनी प्रिय रेखांकित 10 × 6 अभ्यास-पुस्तिकाओं पर लिखते जाते थे।

8. काम खेल हो सकता है

बर्नार्डशा के "जान बुल का अन्य द्वीप" (John Bull's other Island) संज्ञक नाटक में एक पागल पादरी है, जो समान अधिकार रखने वाली प्रजा के आदर्श देश का वर्णन करता है, जिसमें काम खेल है और खेल जीवन है। इस पर टिप्पणी करते हुए ह्वाइटहेड ने कहा है, "मुख्य विचार यह है कि काम बौद्धिक और नैतिक दृष्टि से युक्त होना चाहिए, जिससे थकान और व्यथाओं को पराभूत करके काम आनन्द में बदल जाए।" जब काम खेल का स्वरूप धारण कर लेता है, वह सुख है।

राबर्ट फ्रॉस्ट ने ये विचार बड़ी सुन्दरता से "कीचड़ काल के दो निर्धन" (Two Tramps in Mud Time) संज्ञक छोटी कविता में व्यक्त किए हैं। यह कविता की संक्षिप्त कहानी है। वसन्त का आरम्भ है वृक्ष पत्ते विहीन हैं। बर्फ कीचड़ में बदल रही है। फ्रास्ट लकड़ी चीरने के लिए बाहर उद्यान में हैं, जिससे उन्हें आनन्दानुभूति होती है। दो मजदूर उन्हें व्यथित भाव से देख रहे हैं, क्योंकि वे अनुभव करते हैं कि उन्हें उनके काम और रोटी से वंचित कर दिया गया है। यह फ्रॉस्ट के मानस में एक भ्रान्ति उत्पन्न कर देता है, क्योंकि वह काम को छोड़ना नहीं चाहते हैं, जो उन्हें प्रिय है। फ्रॉस्ट ने कविता को इस प्रकार समाप्त किया है :

(उद्यम और व्यवसाय)
उनके पृथक्करण को कौन मानेगा
जीवन में मेरा उद्देश्य है मिलाना
अपने उद्यम और व्यवसाय को
जैसे मेरी दो आंखें दृष्टि के सन्दर्भ में एक हैं
और मरणशील व्यक्तियों के लिए काम खेल है
जो यथार्थ रूप से कभी किया जाता है
स्वर्ग के लिए और भविष्य के लिए।

जब काम खेल का स्थान ले लेता है, मानव समग्र क्षमता और समर्पण भाव के साथ अपने को काम में प्रवृत्त कर देता है और उस स्थिति में उसे ज्ञान हो उठता है कि उसमें अनसोची पात्रता और योग्यता हैं। उदाहरणार्थ, एक लड़की जो छात्रा

के रूप में दयनीय रूप से असफल रही थी उसने मुद्रण के कार्य को अपनी रुचि के अनुसार अपना लिया था। इस कार्य ने उसे पूर्ण रूप से आकृष्ट कर लिया। उसने अविराम गति से परिश्रम किया और वह मुद्रण-कला की विशेषज्ञा हो गई। शीघ्र ही वह व्यापारिक मुद्रणालय लाभ के साथ चलाने लगी। आसाम सरकार के भूत-पूर्व मुख्य सचिव सर हेराल्ड डेन्ही उत्तम कोटि के प्रशासक थे। उनके लिए काम का वैशिष्ट्र्य ही उसकी स्वयं समाप्ति थी। नरी रुस्तम जी ने अपने सुखद आत्म-चरित 'जादू भरी सीमाएं' (Erihanted Frontiers) में सर हेराल्ड का मनमोहक चित्र प्रस्तुत किया है।

"सर हेराल्ड न थकने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने पैदल चलकर कार्यालय पहुंचने का निश्चय कर लिया था। लाल और सुवर्ण वर्दी पहने हुए तीन चपरासी उनके आगे-आगे चलते थे, जिनकी पीठ पर पिछली रात समाप्त की हुई फाइलों की गठरी रहती थी जैसे बड़े दिन के समारोह में पुरस्कारों से भरे थैले लेकर बाबा चलता है। सर हैराल्ड घर के लिए काम लेकर शाम को विलम्ब से लौटते थे, चपरासियों का वही जुलूस उलट-फेर के साथ उनके साथ होता था। केवल पूजावकाश में एक सप्ताह के लिए सर हेराल्ड मछलियां पकड़ने के लिए शिलांग से बाहर सरक जाते थे। इसके अतिरिक्त दिनानुदिन उनकी यही स्थायी गतिविधि रहती थी।

आज के अधिकारी काम अवश्य करते हैं, पर प्रायः पद पाने के लिए। मुझे विश्वास है कि सर हेराल्ड को अपनी पदोन्नति के सम्बन्ध की आकांक्षाएं नहीं थीं। वह आसाम में सिविल सर्वेंट के सर्वोच्च पद पर पहुंच चुके थे, साथ ही वह अपने पद पर सन्तुष्ट थे, किन्तु अन्त तक उन्होंने अपने काम को अच्छे ढंग से निभाया। चाहे मामला-महत्त्वपूर्ण रहा हो, या न रहा हो, पर उलझी हुई तथा सीधी-सादी फाइलों के प्रति अपने कर्त्तव्य को निभाने से वह हटे नहीं। मैं मानता हूं कि वह पूर्ण थे और वह अरस्तू के इस विचार से सहमत थे कि मनुष्य जब अपनी समग्र क्षमता से काम करता है, वह प्रसन्न होता है।

जब काम में स्वस्थ और मैत्री पूर्ण प्रतियोगिता होती है वह खेल हो जाता है। महान डच इतिहासज्ञ जे. हुइसिंगा ने एक नवीन प्रतिपाद्य प्रस्तुत किया है, जो यह सिद्ध करता है कि खेल काम की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण है और खेल मानवीय संस्कृति का निर्माण करने वाला तत्त्व है। उनकी स्थापना है कि खेल समग्ररूप से व्यापक है। उनका संकेत है कि व्यापार खेल हो जाता है और खेल भी व्यापार हो रहा है। वह उद्योग के एक मार्ग-प्रदर्शक के कथन को उद्घृत करते हैं, जिसको रॉट्टरडम की "वाणिज्य अकादमी" ने यशस्कर उपाधि देकर प्रतिष्ठित किया था :

"सर्वप्रथम जबसे मैं व्यापार में प्रविष्ट हुआ तकनीकी लोगों और बिक्री विभाग में एक प्रतियोगिता सी रही है। एक इतने उत्पादन का प्रयास करता था कि बिक्री विभाग उसे बेच पाने के योग्य न हो सके, जबकि दूसरे का यह प्रयास रहता था

कि वह इतना वेच डाले कि तकनीकी लोग कभी भी उस गति के साथ निर्माण के योग्य न हो सकें। यह दौड़ सदैव चलती रही है कभी एक आगे पहुंचता है और कभी दूसरा। न मेरे भाई ने और न स्वयं मैंने व्यापार को काम नहीं वरन् सदैव एक खेल समझा है। युवा कर्मचारियों में यह चेतना भरने के लिए हम सदैव प्रयत्नशील रहें हैं।"

उनका कथन है कि ये विचार महत्त्वपूर्ण हैं भले ही नमक के कण के समान उन्हें थोड़ा भी लिया जावे।

योग्यतम प्रशासकों में गण्यमान चन्दूलाल त्रिवेदी चुरुट का मलिन धुंआ निकालते हुए कहा करते थे, "मैं आप लोगों से कहता हूं, काम स्वयं ही पुरस्कार है।"

जव काम खेल हो जाता है, असन्दिग्ध रूप से यह किसी भी मानव के लिए उसकी सर्वोच्च उपलब्धि है।

फर्डिजण्ड होकस्टेटर (कोनार्ड लारेंज के अध्यापक) ने इकहत्तर वर्ष की अवस्था में वियाना विश्वविद्यालय में अपने विदाई भाषण में कहा था: "और यदि आप मुझसे पूछें कि शोध और अध्यापन के क्षेत्र में मैंने समग्र जीवन में क्या किया तो मैं ईमानदारी से कह सकता हूं कि मैंने वही काम किया, जिसको उस क्षण में मैंने खेल समझा था।"

9. काम सुन्दर हो सकता है

प्रत्येक व्यक्ति सौन्दर्य की नवीन अनुभूति के लिए उत्सुक रहता है। ऐसी अनुभूतियां हर्षित करती हैं। वे हमको शक्ति देती हैं। वे हमको भद्र बना रही हैं। वे ऊब की भावना को विनष्ट करती हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति सुन्दर वस्तुओं को-देखने की इच्छा रखता है। व्यक्ति जब शीतकालीन रात्रि में गहन नील आकाश को देखता है वह नक्षत्रों की वैभवपूर्ण चमक को देखकर अतीव मुग्ध हो जाता है। ऐसी सौन्दर्य की अनुभूतियां हमारे जीवन के लिए सार्थक और उद्देश्य- पूर्ण होती हैं।

कुछ सुन्दर निर्माण करना स्थायी आनन्द की वस्तु है। चित्रकारों, कवियों, और संगीतज्ञों के समान कलाकार अपने सृजनशील कार्य में निमग्न हो जाता है, किन्तु इससे यह कल्पना करने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसी प्रसन्नता केवल कलाकारों के लिए ही सम्भावित है। कलाकारिता की अन्तः प्रेरणा विश्वव्यापी है। नित्य प्रति की व्यावहारिक चीजें भी सुन्दर बनाई जा सकती हैं।

मराठी के प्रसिद्ध "संजीवनी" उपन्यास में, यह स्पष्ट रूप से वर्णित है कि एक युवती महिला लेखिका ने अपनी स्वच्छता और सौन्दर्य की भावना से प्रेरित हो सामान्य चीजों को इधर-उधर करके अपने अधिकारी के कक्ष को सजीव बना दिया था। स्थायी लेखक अचानक छुट्टी पर चला गया और महिला लेखिका से कहा गया कि वह उसके काम को देखे-भाले। पहले अधिकारी की मेज धूल से भरी रहती थी और चीजें अव्यवस्थित रहती थीं। पैंन्सिलें कभी-कभी ही नुकीली की जाती थीं। अस्त-व्यस्त फाइलों का ढेर लग जाता था। युवती महिला ने निश्चय किया कि मेज पूर्णरूपेण स्वच्छ रहे। उसने मेज पर कुछ ताजे और सुगन्धित फूल रखने आरम्भ किए। पैंन्सिलें उचित रूप से नुकीली करके सफाई से रखी जाने लगीं। स्याही सोख कागज नियमित रूप से बदला जाने लगा। फाइलें श्रेणीबद्ध करदी गई और व्यवस्थित रूप से लगा दी गई। दिन-भर की भेंटों और नियुक्तियों का टंकित किया हुआ विवरण नियमित रूप से मेज पर रखा जाने लगा। ये सब छोटी-छोटी चीजें हैं, पर इन सब का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा। कक्ष ने नवीन रूप

धारण कर लिया जिससे ताजापन और सुन्दरता दृष्टिगोचर हो उठी, इसने अधिकारी को अपना काम करने के लिए नवीन प्रेरणा प्रदान की। उसको ऐसे सुहावने वातावरण में काम करने में आनन्द की अनुभूति होने लगी थी।

जापान में पूर्णतः स्वच्छता और सुन्दरता के प्रति व्यापक प्रयास है। प्रत्येक प्राणी प्रत्येक स्थल पर सुन्दरता से घिरा हुआ है। प्रत्येक चीज स्वच्छ रहती है। "जापानियों में सौन्दर्य की सजीव भावना रहती है। वे जिस चीज को भी स्पर्श करते हैं, सुन्दर बना देते हैं। वे उसे सुशोभित, अलंकृत और साज-सज्जा-युक्त कर देते हैं। जापान में समोसा ठीक समोसा नहीं, है वह एक कलाकृति है। वह कलात्मक रूप से काटा जाता है—वृत्ताकार, अष्टभुजाकार, नक्षत्र के स्वरूप का। उसमें रंग की योजना भी रहती है, टमाटर के टुकड़े भी बड़ी सतर्कता से लगाए जाते हैं।"

जापान में व्यर्थ समझी जाने वाली चीजों को सुन्दर बनाकर रखते हैं, इस सन्दर्भ का जार्ज माइक्स वर्णन करते हैं। जापानी किसी भी चीज को सुन्दर बनाने के लिए विवश हैं। "एक कारखाने के पिछवाड़े भाग में कूड़े-करकट का एक विशाल पर्वत एकत्रित हो गया था, वह जिस रूप में फेंका गया था, उसे उस रूप में ही न रखा गया। सभी वक्सों को सुन्दरता से लगाया गया, जैसे मन को प्रसन्नित करने वाला शुण्डाकार स्तम्भ हो, जबकि बिखरे हुए कूड़े-करकट को उसके ऊपर कलात्मक और चित्रात्मक ढंग से सजाया गया था।"

नित्य प्रति के मामले जव काल्पनिक और व्यवस्थित रूप से किए जाते हैं, वे एक विशिष्ट स्वरूप और सज-धज धारण कर लेते हैं। वे शोभायुक्त और सुन्दर हो जाते हैं। लार्ड माउण्टवेटेन एक बहुत बड़े उत्साही और व्यवस्थायुक्त काम करने वाले थे। वाइसराय के रूप में भारतवर्ष की स्थिति समझने के लिए आरम्भ में उन्हें बहुत भेंटें करनी पड़तीं थीं। उन्होंने इन भेंटों के लिए एक अद्वितीय पद्धति की स्थापना की थी। प्रत्येक भेंट के अनन्तर द्वितीय भेंट के मध्य पन्द्रह मिनट का अन्तराल रहा करता था, जिसमें वह पिछली भेंट-सम्बन्धी विचार-विनिमय को बोल कर लिखा देते थे। इन टिप्पणियों को सन्दर्भ संख्या दे दी जाती थी और तत्काल ही उनको अधिकारियों के मध्य में घुमा दिया जाता था, इससे उनको नवीन गतिविधियों के विस्तार का पता चलता रहता था। इस प्रकार व्यवस्थित काम आनन्द का कारण वन जाता है। सफलता की भावना, जो इसका अनुगमन करती है, अतीव प्रेरक होती है।

फ्रांस के प्रसिद्ध कलाकार फरनेण्ड लेगर ने ठीक कहा है, "सुन्दरता की आवश्यकता प्रतीत होने की अपेक्षा अधिक व्यापक है। बचपन से युवा होने तक सुन्दरता की पर्याप्त मांग रहती है। हमारी तीन-चौथाई चेष्टाएं और लालसाएं इसकी इच्छा से ही प्रभावित रहती हैं।"

किस प्रकार एक कारीगर श्रम पूर्वक प्रदर्शन की खिड़की में कुरीतियों की व्यवस्था कर रहा था, इसका उन्होंने सजीव वर्णन किया है :

"इस आदमी, इस कारीगर की सत्रह कुरीतियां अपनी खिड़की में उसके चारों और उतने ही आस्तीन के वन्धनों और नेकटाइयों को सजाना था। उसने प्रत्येक पर ग्यारह मिनट व्यय किए थे, इसका मैंने उसे समय दे दिया था। छठी मद के वाद मैं थककर चला गया था। उस आदमी के सामने मैं एक घण्टा रहा था, वह व्यवस्थित चीजों के प्रभाव को देखने के लिए वाहर आ जाता था। वह प्रत्येक समय वाहर आता था। किन्तु वह इसमें इतना निमग्न हो गया था कि वह हमें भी न देख पाया था। व्यवस्था के कौशल के साथ वह अपने चश्मों को ठीक करता था, माथे पर झुरियां डाल लेता था, था, आंखों को स्थिर कर लेता था, जैसे उसका समग्र भावी जीवन इसी पर निर्भर हो।'

संक्षेप में कहने का यह आशय है कि सीधे-सादे नित्य-प्रति के कामों को सुन्दर वनाया जा सकता है। एक कर्मचारी जो अपने औजारों को उचित स्थान पर रखता है, नियमित रूप से अपनी मशीन को साफ करता है और विना नष्ट किए कच्चे माल का उपयोग करता है, वह सुन्दरता का निर्माण कर रहा है। उसको काम करते हुए देखकर प्रसन्नता होती है।

10. काम क्रियात्मक हो सकता है

कुछ लोग उन चीजों को देखते हैं, जो हैं और पूछते हैं कि वे ऐसी क्यों हैं,
मैं उन चीजों के स्वप्न देखता हूं, जो कभी नहीं थीं और कहता हूं कि वे क्यों
नहीं हो सकती हैं।

—बरनार्ड शॉ

क्रियाशीलता की परिभाषा सरल नहीं है। एक क्रियाशील काम की प्रकृति ही ऐसी होती है, जो वर्णनातीत है। "यह अज्ञात रहता है और जब तक यह हो नहीं जाता है" यह अज्ञेय ही रहता है। यह असम्भावित होता है और सम्भावित हो जाता है।' क्रियाशील काम अविष्कार की प्रतीति कराता है—यह है', मैंने इसे खोज लिया है,

"यही वह है, जिसकी मैं अभिव्यक्ति करना चाहता था।"

क्रियाशीलता का विषय व्यापक, और विरोधात्मक रहता है। इन उलझनों से हमारा यहां कोई सम्बन्ध नहीं है। एक बात स्पष्ट है, जो भ्रान्ति के परे है। जब व्यक्ति किसी भी नवीन, उपयोगी और सुन्दर काम को करने में सफल होता है वह अत्यधिक प्रसन्न हो जाता है। यह क्रियाशीलता केवल वैज्ञानिक, तकनीक का ज्ञानी और कलाकार ही नहीं कर सकता है, वरन् वह सभी क्षेत्रों और सभी स्तरों पर सम्भव है। प्राइमरी स्कूल का एक अध्यापक भी क्रियाशील हो सकता है।

क्रियाशील व्यक्ति अपनी समग्र चेतनाओं का उपयोग करता है। क्रियाशीलता ज्ञान, अनुभव, विनम्रता, आत्म विश्वास, अन्तर्ज्ञान जैसे कई तत्त्वों तथा दीर्घकालीन और एकाग्र मन के प्रयासों के आश्रित है। क्रियाशीलता परिश्रम से किए जाने वाले काम की भूमि पर उगती है। उदाहरणार्थ, एडीसन ने अपने फोनोग्राफ के निर्माणाधीन विकास के समय पांच दिन और रात लगातार एक साथ काम किया था। जब वह अपने आविष्कारों में लगा था वह चार या पांच घण्टों से अधिक न सोता था। विक्टोरिया-युग का सम्भवतः नवीन पद्धति का सर्वोच्च संस्थापक और साहसी इंजीनियर ब्रुनेल ग्रेट ईस्टर्न के काम को अपनी रुग्ण शय्या पर से निर्देशित किया

करता था। उस जहाज ने उसके स्वप्न को साकार किया था, जिसका ढांचा उस समय के तैरने वाले किसी भी जहाज से छः गुना बड़ा था। गुर्दे के ऊपरी भाग की बीमारी के कारण उसे पक्षाघात हो गया था।

क्रियाशील व्यक्ति अपने काम करने की पद्धति को स्वयं विकसित करते दिखलाई पड़ते हैं। शिलर जब काव्य-रचना करते होते थे, डेस्क के ढक्कन के नीचे स्वयं के छिपाए हुए सेव के सड़ने की गन्ध से वह काव्य-रचना के लिए प्रोत्साहित होते थे। वाल्ट्र डेला मेअर अपने लिखने के समय निरन्तर धूम्रपान किया करते थे। आडेन न समाप्त होने वाले चाय के प्याले पिया करते थे, जबकि काफी पीना स्टीफन स्पेण्डर का व्यसन था।

महान् दार्शनिक डेकार्टस अपनी शय्या पर ही दार्शनिक चिन्तन किया करते थे। कुछ मित्र प्रातः 11 बजे उनसे भेंट करने आए उस समय भी वह अपनी शय्या पर थे। उनका प्रश्न था, "आप क्या कर रहे हैं ?" उनका उत्तर था, "चिन्तन"। इस शताब्दी के सबसे बड़े गणितज्ञ जान वोन न्यूमन बड़े विलम्ब से सोने जाया करते थे और प्रातःकाल देर में जागा करते थे। जब एक वैज्ञानिक मित्र ने प्रातः दस बजे के बाद उन्हें फोन किया और उन्हें बतलाया कि उनके प्रश्न की व्याख्या ठीक है। उन्होंने कहा, "आपने मुझे प्रातः तड़के यह कहने के लिए जगा दिया कि मैं ठीक हूं, कृपया प्रतीक्षा करें जब तक मैं गलत हूं।"

कानून सम्बन्धी अन्तर्देशीय ख्याति के विद्वान प्रोफेसर बलडाक बिस्तर पर ही अपना अधिकांश काम करना पसन्द करते थे। वह सोचा करते थे कि यदि वह अपनी टांगों को अपने सर के सतह से ऊंचा रखें तो वह अधिक घण्टों काम कर सकते हैं। वह होटल में स्वयं को बन्द कर लिया करते थे, वहां समोसों और काफी पर जीवन को सुरक्षित रखे हुए उन्होंने अधिकांश प्रतिष्ठित कानूनी लेख लिखे थे।

क्रियाशीलता का मानदण्ड नहीं हो सकता है। मानव अनन्त प्रकार से क्रियाशील हो सकता है। यूगोस्लेविया में जन्मी मदर टेरेसा ने भारतवर्ष में मानवीय कार्य करते हुए अन्तर्देशीय ख्याति अर्जित की है। वर्षों पहले जब कलकत्ता में वह घूम रही थीं उन्हें वहां के प्रसिद्ध अस्पतालों में एक अस्पताल के सामने फर्श पर पड़ी हुई एक स्त्री दिखाई पड़ी। वह गम्भीर रूप से बीमार थी, उसे यह भी अनुभव न हो रहा था कि उसके पैरों को चूहे और कनखजूरे कुतर रहे हैं। मदर ने कलकत्ता के अस्पताल में उसे प्रवेश दिलाने के यथेष्ट प्रयास किए, पर वह असफल रहीं। तब उन्होंने मरणासन्न निराश्रितों के लिए "निर्मल हृदय"—शुद्ध हृदय का संस्थान-संज्ञक आवास संस्थापित करने का निश्चय किया। यह एक अप्रतिम संस्थान है, जो मानवीय करुणा के लिए किया हुआ सक्रिय काम है।

मार्क्स और स्पेन्सर

'मार्क्स और स्पेन्सर' ने इंगलैण्ड के व्यापार में क्रियाशीलता का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। जो फर्म 1884 ई. में 'एक पैनी बाजार' के रूप में स्थापित हुई थी 1915 ई. में वही सभी प्रकार से भरा-पुरा फुटकर बिक्री का प्रसिद्ध संस्थान बन गयी। 1924 ई. में साइमन मार्क्स बाजारू क्रान्ति के अध्ययन के लिए अमेरिका गया, अमेरिका की बाजारू क्रान्ति ने वहां के वाणिज्य और उद्योग को अत्यधिक यशस्वी बना दिया था। साइमन मार्क्स इससे अत्यधिक प्रभावित हुआ था। वह वहां से अपने व्यापार को नवीन परिभाषा देने के निश्चय को लेकर लौटा। "इंगलैण्ड में सामाजिक क्रान्ति लाना" उसका नवीन उद्देश्य था।

यह एक नया दृष्टिकोण, एक बड़ा परिवर्तन था। उन दिनों अंग्रेज समाज में वर्ग-चेतना की प्रबल भावना थी। वस्त्रों का पहनावा वर्ग का प्रतीक बन गया था। उच्च वर्ग सुन्दर प्रकार के जबकि निम्न वर्ग निम्न श्रेणी के वस्त्र पहनता था। 'मार्क्स और स्पेन्सर ने इस अन्तर को मिटाने का निश्चय किया। उनका निर्णय था कि उच्च वर्ग के स्तर के वस्त्र निम्न वर्ग के लिए भी बनाए जाएं, जिनका मूल्य निम्न वर्ग को भी स्वीकार्य हो। यह एक भला मन्तव्य था जो आश्चर्यजनक ढंग से पूर्ण हुआ था। फुटकर बिक्री के लिए 'मार्क्स और स्पेन्सर" विश्व का सबसे बड़ा भण्डार है।

क्रियाशीलता को उच्च व्यवस्था के क्रिया-कलापों तक सीमित रखने की आवश्यकता नहीं है। उदाहरण के लिए, एक फर्म में ग्राहकों को (खरीद का) पुर्जा महीने के अन्त में देने की परिपाटी से काफी कार्य-भार बढ़ गया था। परिपाटी बदल दी गई, जिससे ग्राहकों के आठवें भाग को प्रति सप्ताह पुर्जे दिए जाने लगे। कार्य-भार इस प्रकार समान रूप से फैल गया कि महीने में प्रत्येक ग्राहक को पुर्जा मिलने लगा। इससे लगभग सौ लेखकों के वेतन की बचत हुई।

अधिक उत्पादन देने वाले संकरित अनाज के विकास में (इलीन्वाइज, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका) एक अशिक्षित साधारण किसान जार्ज क्रुग का बहुत बड़ा योगदान है, अब इस प्रकार के अनाज समग्र विश्व में उगाए जाते हैं। उसने इस तर्क के साथ कि उसके घोड़े और गाय मात्र सुव्यवस्थित रूप से उगाए अन्न की चिन्ता नहीं करते हैं (उन्हें जो मिलता है वे खाते हैं) उसने अधिक उत्पादन के लिए "उच्च जाति के अन्न" उत्पादन की प्रवृत्ति को हेय समझा। जब वह अपने साधारण अनाज को प्रतिद्वन्द्विता में रखने के लिए एक प्रान्तीय प्रतिनिधि के पास ले लिया—उसने उसको लौटा दिया। पर तीन वर्ष के भीतर इस पद्धति द्वारा 120 प्रकार के श्रेष्ठ उत्पादन प्रस्तुत हुए। यह संकरित अन्न-उत्पादन का प्रमुख अंग बन गया, जो अब विश्व भर में उपयोग में आता है।

11. राष्ट्रीय विकास के लिए अनुशासित काम आवश्यक है

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ए. के दासगुप्ता ने कहा है कि उत्पादन के लिए उद्यम और मितव्यय की अनुकूल व्यवस्थाएँ सशक्त साधन हैं। मुख्यतः इन गुणों के कारण 1960-1970 ई. में जापान अपनी राष्ट्रीय आय को दुगुना कर सका था। संसार में बचत का यह प्रमाण सर्वोच्च है। 1970 ई. के पहले समग्र राष्ट्रीय आय का 40 प्रतिशत इसने बचाया था। जापानी अपने समय और श्रम को नष्ट नहीं करते हैं। उनके काम सम्बन्धी सूक्ष्म से सूक्ष्म विवरण योजनाबद्ध होते हैं और तदनुसार ही वे किए जाते हैं। उदाहरणार्थ, होण्डा मोटर कम्पनी छोटे पुर्जों का संग्रह नहीं रखती है। इस प्रकार की व्यवस्था रहती है कि जुड़ने वाले मोटर के भागों के अन्त में अतिरिक्त पुर्जे लगने वाले ठीक क्षण पर लगाये जाते हैं, घण्टों पहले नहीं नहीं। जापान में न्यूनतम कमी सम्बन्धी परिहार के आन्दोलन को उल्लेखनीय सफलता मिली है। काम का उचित सम्पादन आर्थिक विकास का आवश्यक अंग है। अर्थशास्त्र के नोबल पुरस्कार के विजेता और 'एशियन ड्रामा' के तीन खण्डों के लेखक गुन्नार मिरडाल ने कहा है :

"यदि भारत शीघ्र ही ठोस उन्नति करना चाहता है तो उसका श्रेष्ठ और आवश्यक कर्तव्य है कि वह अपने श्रम सम्बन्धी उत्पादन को बढ़ावे। अन्ततः इसी मानवीय तत्व के फलस्वरूप भारतीय आर्थिक योजना सफल होगी अथवा असफल। क्या भारत अपने लोगों से अधिक और अधिक अच्छा काम तथा अधिक उत्पादन नहीं करा सकता है?"

पण्डित नेहरू ने एक बार कुपित होकर कहा था; "हमारा जन-समाज आलसी हो रहा है. मुख्यतः अपने हाथों और पैरों से तथा पर्याप्त रूप से अपनी बुद्धि से भी।"

रूस की क्रांति के उपरान्त लेनिन ने भी यही बात कही थी:

"सोवियत शासन का यह काम है कि वह लोगों को सभी क्षेत्रों में काम करना

सिखलाए।"

1920 ई. में कवि और औद्योगिक इंजीनियर ए. के. गास्टेव ने कारखानों की व्यवस्था के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए एक केन्द्रीय श्रम संस्थान की स्थापना की थी।

रूसियों की व्यवस्था सम्बन्धी अज्ञानता को दूर करने के लिए उस समय जो पर्चा जारी किया गया था, उसका विषय मनोरंजक पाठ प्रस्तुत करता है :

समय ! पद्धति ! और शक्ति ! इन शब्दों के क्या अर्थ हैं ?

समय :

अपने समय का नाप-जोख रखो, इस पर नियंत्रण रखो !

प्रत्येक काम समय पर करो ! ठीक, और उसी क्षण !

समय बचाओ, समय को देखे रहो, तेजी से काम करो !

अपने समय का ठीक-ठीक विभाजन करो, समय काम के लिए और समय आराम के लिए !

अपने आराम का इस प्रकार उपयोग करो, जिससे उसके बाद अच्छा काम हो !

पद्धति :

प्रत्येक काम योजना के अनुसार, पद्धति के अनुसार !

पद्धति सम्बन्धी एक अभ्यास पुस्तिका हो, अपने काम में क्रम-बद्धता हो ! प्रत्येक योजना के अनुसार काम करो !

शक्ति :

दृढ़ता से अपने लक्ष्य का संधान करो !

कठोर श्रम करो, असफलताओं पर भी पीछे न हटो !

जो तुमने आरम्भ किया है, सदैव उसको समाप्त करो !

समानाधिकार, यथार्थवादिता, और सतर्कता !

राष्ट्र के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए नित्य-प्रति के काम में ईमानदार होना और परिश्रम से काम करना आवश्यक है। यह कहा जाता है कि इंगलैण्ड का धीरे-धीरे पतन हो रहा है। इसकी सड़कें गन्दी हो रही हैं और इसके रेल के डिब्बे तथा भोजनालय भद्दे हो रहे हैं। इससे प्रकट होता है कि वहाँ काम के प्रति रुचि घट रही है। कर्मचारी चाय पीने के लिए आधा घण्टे के अवकाश के आदी हो गए हैं और जाने के समय से एक घण्टा पूर्व तैयारी करने के अभ्यस्त हो गए हैं। कुछ वर्ष पूर्व यह अनुमान लगाया गया था कि एक जहाज बनाने में इंगलैण्ड को उन्नीस महीने, इसकी तुलना में जर्मनी को दस महीने, स्वीडन को नौ महीने, जापान को आठ महीने लगते हैं। पन्द्रह हजार टन के "गाथिक" के सुधार सम्बन्धी काम के लिए ब्रिटेन के "रायल टुअर लाइनर" ने पश्चिमी जर्मनी की एक फर्म का विश्वास किया था, जहाँ यह काम शीघ्रता से और सस्ता हो गया था। ब्रिटिश राष्ट्र के

लिए यह कहा जाता है कि आलस्य और अपात्रता के लिए वहाँ राष्ट्रीय सहिष्णुता पनप गई है।

जापान के "हिताची" और ब्रिटेन के "इंगलिश इलेक्ट्रिक" इन दो कारखानों के उत्कर्ष के नवीन अध्ययन उनकी औद्योगिक कार्य क्षमता के लिए किए प्रयासों के अन्तर पर प्रकाश डालते हैं। जापानी समन्वित कार्य क्षमता और अंग्रेज व्यक्तिगत स्वतंत्रता का मूल्यांकन करते हैं···

(1) हिताची के व्यवस्थापक और उद्योग संघ के नेता अपने अंग्रेजी प्रतिरूपों (व्यवस्थापकों और संघ के नेताओं) की तुलना में कार्य क्षमता पर कहीं अधिक वल देते हैं।

(2) हिताची के संघ नेता समन्वय, कार्य-क्षमता और क्रमबद्धता को व्यक्तिगत प्रतिष्ठा. स्वतंत्रता और समानता की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं। अंग्रेजी संघ के सदस्य उत्पादन क्षमता से व्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा को अधिक मान देते हैं।

(3) हिताची के संघ-नेता संस्थान की सम्पन्नता और विकास के सन्दर्भ में व्यवस्थापकों की इच्छाओं के साथ सहयोग करते हैं। अंग्रेजी संघ-नेता इस प्रकार का विरल सहयोग दिखलाते हैं।

इंगलैण्ड की अर्वाचीन आर्थिक स्थिति वहाँ के लोगों की कार्य-क्षमता के प्रति रुचि के अभाव के कारण है।

आधुनिक संसार को काम के एक नवीन दर्शन की अपेक्षा है। इसके मुख्य सिद्धान्त का इस प्रकार उल्लेख किया जा सकता है: राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था मात्र एक आर्थिक व्यवस्था के समग्र क्षेत्रों में सर्वत्र कमी ही रहेगी। प्रत्येक स्वभावतः दूसरे से यथा सम्भव श्रेष्ठ और अच्छे काम की आशा करता है। यदि वह अपने कर्तव्यों को पूरा करता है और अपने अधिकारों को उचित रूप से निभाता है तो वह न्यायतः ऐसी आशा को पल्लवित रख सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि वह सौंपे हुए कामों के प्रति अपने ज्ञान, प्रतिभा, चातुर्य, साधन, समय और शक्ति का यथा सम्भव उपयोग करें ओर अपने साथी कर्मचारियों को यथा सम्भव पूर्ण सहयोग दें। अपने काम के प्रति निष्ठावान होने से वह अपने अधिकारी, परिवार, समाज, देश, मानवता तथा धर्म तक के प्रति निष्ठावान रहेगा। और सबसे वड़ी वात यह है कि वह अपने चित्त को व्यक्तिगत रूप से अपने काम, उत्पादन, समाज, और सबसे ऊपर अपने स्वत्व से हटा कर संतप्त न होगा। क्योंकि तब उसका काम स्वयं उसका एक अंग वन जाता है। उसे अपने काम में आनंद मिलता है।

जापानी लोगों ने संसार में आर्थिक विकास का सर्वोच्च प्रमाण प्रस्तुत किया है। यह इसलिए है कि वे अपने दैनिक कार्य के प्रति वद्ध हैं और वे अपने को पवित्र मानते हैं। निम्नांकित गीत पर विचार करो, जिसे मतसुशिता कारखानों के

कर्मचारी काम आरम्भ करने से पूर्व प्रतिदिन गाते हैं :

नवीन जापान के निर्माण के लिए,
हम अपनी शक्ति और ब्रुद्धि को साथ-साथ रखें
अपने उत्पादन की वृद्धि के लिए हम यथासाध्य प्रयत्न करें
संसार के लोगों के लिए हम अपने माल को
अनन्त और-लगातार रूप से भेजें
जैसे झरना से धक्का मारते हुए पानी निकलता है
उद्योग बढ़ाओ, वढ़ाओ, वढ़ाओ, वढ़ाओ
समन्वय और तत्परता (वढ़ाओ)।

12. सफलता की प्रेरणा

प्रसिद्ध मानस शास्त्री डी. सी. मैक्कलीलाण्ड ने अपने श्रेष्ठ ग्रंथ सफल समाज (The Achieving Society) में एक नवीन सिद्धान्त की स्थापना की है, जो आर्थिक विकास सम्बन्धी विषय का विवरण प्रस्तुत करता है। उनका सुझाव है कि सफलता की अपेक्षा जो मानवीय विशेष प्रवृत्ति है वह आर्थिक विकास की कुंजी है (जिसका गुर है 'n Ach'—एन एच)

मैक्कलीलाण्ड ने सिद्ध किया है कि 900 और 450 वर्ष ईसा पूर्व के मध्य ग्रीस में आर्थिक विकास की सर्वोच्च प्रेरणा थी। आर्थिक विकास के इस गतिवान युग में मनुष्य बड़े साहसी थे। उन्होंने अविराम रूप से ऐश्वर्य को प्राप्त करने, साम्राज्य का विस्तार करने, स्मारक और प्रसाद बनाने में, जिनका प्रायः व्यावहारिक उपयोग न था, कठोर परिश्रम किया था। उनकी मात्र प्रेरणा थी कुछ दर्शनीय उपलब्धि की।

ऐश्वर्य की आवश्यकता की ओर मानव क्यों अग्रसर हुआ, इस प्रश्न पर विद्वानों ने उत्सुकतापूर्वक वाद-विवाद किया है। महान् जर्मन विद्वान मैक्स बेवर ने सर्वप्रथम इस प्रतिपाद्य का समर्थन किया था कि कुछ दृढ़ विचारों ने ही ऐश्वर्य-वृद्धि की ओर अग्रसर किया था। दृढ़ विचारों की मान्यता के पोषक चिन्तकों ने बतलाया कि प्रत्येक व्यक्ति का मूल्यांकन उसके आजीवन के लिए कामों के आधार पर होगा, मुख्यत: जिससे प्रेरित हो उसने सफलता प्राप्त की। धन का अर्थ मात्र व्यक्तिगत सुख-सुविधा नहीं है। इसलिए कठोर परिश्रम, आत्म निग्रह, विरक्ति, कुछ बौद्धिक उपलब्धि की कामना-सर्वश्रेष्ठ गुण हैं। ये गुण ही ऐश्वर्य-विकास के कारण हैं। एक अंग्रेज विद्वान टानी ने कुछ अलग व्याख्या प्रस्तुत की है। उसका कथन है कि दृढ़ विचारों की अपेक्षा व्यक्तित्व की चेतना (अहंभाव) को ऐश्वर्य की अभिवृद्धि करने का श्रेय है।

काम की सफलता के सन्दर्भ में मैक्कलीलाण्ड ने एक अलग व्याख्या प्रदान की है, जो निम्नांकित मानचित्र द्वारा प्रदर्शित है :

बेवर की कल्पना

दृढ़ विचार————आधुनिक ऐश्वर्य की चेतना,
(आत्म विश्वास, गुण आदि)
स्वातंत्र्य और अभिभावकों द्वारा श्रेष्ठ प्रशिक्षण———पुत्रों में सफलता की प्रेरणा

मैक्कलीलाण्ड की कल्पना

मैक्कलीलाण्ड का सिद्धान्त संक्षेप में इस प्रकार है :

(अ) दृढ़ विचारों और गुणों के फलस्वरूप बच्चों का नवीन पद्धति से पालन-पोषण हुआ।

(व) इन पद्धतियों ने बच्चों में सफलता की प्रेरणा को प्रोत्साहित किया।

(स) वच्चे यथा समय साहसी और सफलता के लिए उन्मुख हुए।

मैक्कलीलाण्ड का सिद्धान्त स्थूल शोध पर आश्रित है। उन्होंने सन 1925 में चालीस देशों के वच्चों की प्रसिद्ध कहानियों को, जिनमें सफलता का प्रतिपाद्य प्रस्तुत था, एकत्रित किया। इन देशों में अगले पच्चीस वर्षों के मध्य सफलता और आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण पारस्परिक सम्बन्ध था।

मैक्कलीलाण्ड ने इसलिए सुझाव दिया था कि बच्चों के पोषण के विशेषज्ञों को उन्नतिशील देशों में भेजा जाए, जिससे वे अभिभावकों को बच्चों में सफलता की प्रेरणा भरने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

सफलता की आवश्यकता मात्र उन्नति की कामना है। यही श्रेष्ठता का अन्वेषण है। मैक्कलीलाण्ड ने तर्क दिया है कि अधिकाधिक लाभ कमाने की इच्छा की तुलना में पूर्णता प्राप्त करना आर्थिक विकास का मुख्य आधार है।

सफलता की उच्च प्रेरणा से युक्त मनुष्यों की निम्नांकित चारित्रिक विशेषताएँ होती हैं :

(1) वे धन, प्रतिष्ठा या अधिकार की तुलना में काम की स्वयं श्रेष्ठता में अधिक रुचि रखते हैं। प्रतिष्ठा के सुयोगों की तुलना में काम की श्रेष्ठता के सुयोगों में सक्रिय होने का वे अधिक मूल्यांकन करते हैं।

(2) वे समूहों में काम करने को तैयार रहते हैं।

(3) वे काम के सहकारियों में मित्रों की अपेक्षा विशेषज्ञों को चुनते हैं।

(4) वे अन्यान्य कामों द्वारा धनी बनने की तुलना से सफल साहसी होना अधिक पसन्द करते हैं।

(5) असफलता की अपेक्षा सफलता से उनका अधिक सम्बन्ध होता है।

(6) वे विविध योजनाओं की क्षमताओं का अनुमान लगाने में अधिक यथार्थवादी होते हैं।

(7) वे अधिक दीर्घदर्शी रहना चाहते हैं। दीर्घकालीन योजना में वे अपनी रुचि

दिखलाते हैं।

(8) कठिनाइयों के समय समस्याओं के नवीन और सृजनशील समाधानों पर पहुंचने के लिए वे शीघ्र ही अपनी बुद्धि, व्याहारिक तर्क और अन्तर्ज्ञान का उपयोग करते हैं।

(9) वे अपनी अनुभूति और अपने स्तरों से प्रेरित हो स्वतंत्र रूप से सोचते हैं।

सफलता की प्रेरणा की अनुपस्थिति

मैक्कलीलाण्ड ने भारत में व्यापक शोध किए थे, जो यह सिद्ध करते हैं कि यदि सफलता की प्रेरणा निर्बल है तो आर्थिक विकास अवरुद्ध हो जाता है। ऐसी दो घटनाओं पर यहाँ सक्षेप में विचार किया गया है।

(1) काकिनाडा में मछुए

आन्ध्र प्रदेश में समुद्री किनारे पर स्थित छोटे गाँव काकिनाडा के मछुओं की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए एक प्रकल्प आरम्भ किया गया था। मछुओं की दयनीय स्थिति अभिवृद्धि पर थी। बंगाल की खाड़ी में मछली पकड़ने के उनके जाल शीघ्र ही फट जाते थे। इसीलिए मछली पकड़ने के लिए नाइलोन के बड़े जाल सरकार ने उनको दिए, जिनमें अधिक मछलियाँ फँस सकती थीं और सरलता से उनके फटने की भी सम्भावना न थी। आशा यह थी कि वे अधिक मछलियाँ पकड़ेंगे, उनकी आय बढ़ेगी, वे बचाएँगे, और उसका उपयोग करेंगे, इस प्रकार उनकी आर्थिक स्थिति सुधरेगी।

परिणाम आशा के विपरीत निकले। जब वे अपेक्षित मात्रा में मछलियाँ पकड़ लेते थे अपना काम बन्द कर देते थे और दूसरे जो अधिक मछलियाँ पकड़ते थे अपनी अतिरिक्त आय से शराब खरीदते थे और खेल-कूद में व्यय कर देते थे। इस प्रकार उनका कोई आर्थिक विकास न हुआ और उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन न हुआ।

(2) बारपाली ग्राम-सेवा

यदि सफल होने की यह प्रेरणा सशक्त नहीं है तो भली प्रकार से नियोजित और सहृदयता पूर्वक अनुदान युक्त योजनाएँ भी सफल नहीं होती हैं। बारपाली ग्राम-सेवा का इतिहास में एक श्रेष्ठ उदाहरण उपलब्ध है, जो 1952 ई. से 1962 ई. तक दस वर्ष के लिए 'अमेरिकन मित्र-सेवा संगठन' द्वारा उड़ीसा में कार्यान्वित हुई थी। इस प्रकल्प में साठ लाख रुपये लगाए गए थे।

योजना का उद्देश्य लोगों को प्रेरित करना था···

(अ) जल-वितरण की सुरक्षा करना।

(ब) रोगों के नियंत्रण के लिए पाखानों का उपयोग करना ।
(स) सब्जियाँ उगाने और मुर्गी-पालन जैसी आर्थिक फसलें बढ़ाना ।
(द) "चर्मकार सहकारी" और "बुनकर सहकारी" दो संस्थाओं की व्यवस्था करना ।

आवश्यकताओं और इच्छाओं के सन्दर्भ में प्रत्येक स्थिति में ग्रामीणों के अभिमत लिए गए थे । दस वर्ष के उपरान्त नृशास्त्री डाक्टर टॉमस फ्रेसर ने इस योजना के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत किया । उनकी उपलब्धियों के संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैं :

(अ) 154 से अधिक पम्प कुओं से सुरक्षित जल-वितरण द्वारा ग्रामीणों की सेवा की गई थी ।
(ब) आरम्भ में ग्रामीणों ने अधिक सब्जियां उगाईं, पर बाजार की सुविधाओं के अभाव में उनके मूल्य गिर गए और ग्रामीणों ने अधिक सब्जियां उगाना बन्द कर दिया ।
(स) स्थानीय मुर्गों के स्थान पर विशुद्ध घरेलू जाति के मुर्गे दिए गए, किन्तु दस वर्ष के बाद भी मुर्गियों की सुधरी जाति के चिह्न न मिले । सुधरी जाति के मुर्गियों के बच्चों की अधिक देख-भाल की आवश्यकता थी । उदाहरण के लिए उन्हें चार दीवारी के भीतर रखने की आवश्यकता थी, क्योंकि स्थानीय पक्षियों के समान वे तेजी से दौड़ नहीं सकते थे । इससे वे स्थानीय कुत्तों के शिकार हो जाते थे । वस्तुतः मुर्गियों के सुधार की कोशिश में उनके बच्चों की संख्या विलुप्त होने के साथ ही विनष्ट हो गई ।
(द) सहकारी संस्थाओं का जहां तक सम्बन्ध है, बुनकरों की सहकारी संस्था को आरम्भ में कुछ सफलता अवश्य मिली, पर आन्तरिक संघर्ष और प्रतिद्वन्द्विता के फलस्वरूप वह उचित रूप से चल न सकी । "चर्मकार सहकारी संस्था" कभी आरम्भ ही नहीं हुई । लोगों ने इस बीच उसे खाद बनाने के लिए जानवरों की हड्डियों के चूर्ण करने के प्रकल्प में स्थानांतरित कर दिया ।

संक्षेप में साठ लाख रुपये के व्यय से कोई भी उपयोगी परिणाम न निकला ।

सफलता की प्रेरणा को सशक्त बनाने की आवश्यकता अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है और मैक्कलीलाण्ड ने यह प्रमाणित किया है कि सफलता की प्रेरणा को सशक्त और उत्साहपूर्ण बनाने के लिए प्रशिक्षण के कार्यक्रमों की व्यवस्था की जा सकती है । जापानी व्यक्ति के काम करने के जीवन में प्रशिक्षण की निरन्तर आवश्यकता समझते हैं । उनके प्रशिक्षण के कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बड़ा सरल व अत्यधिक महत्वपूर्ण है । "व्यक्ति किस प्रकार अपने नित्य-प्रति के काम में श्रेष्ठता प्राप्त करे ।

किस प्रकार अपने काम-सम्पादन में निरन्तर सुधार ला सके।" उनकी श्रेष्ठता की यह कामना बड़ी स्वस्थ है। यह व्यक्ति को आत्मिक निराशा से मुक्त रखती है और यह सच्ची महान सभ्यता की नींव है।

हमारे संविधान का यह संशोधन महत्त्वपूर्ण है, जिसके अनुसार प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्त्तव्य होगा—

"व्यक्तिगत और सामूहिक क्रिया-कलापों के समग्र क्षेत्रों में श्रेष्ठता के लिए प्रयास करना, जिससे राष्ट्र निरन्तर प्रयास और उपलब्धि के उच्चतर स्तर पर उठता है।"

13. काम एक नैतिक बाध्यता है

कदाचित ही लोगों को अवगत है कि उनका सुख-पूर्ण जीवन कई हजार लोगों के काम पर आश्रित है। उदाहरण के लिए सबसे प्रथम वस्तु जिसको प्रातः लगभग प्रत्येक व्यक्ति पीता है—वह है चाय का गर्म प्याला। यह चाय का प्याला कई हजार लोगों के काम का समन्वय है, जो सरलता से बतलाया जा सकता है। चाय के एक प्याले को तैयार करने के लिए चीजों की संख्या पर विचार कीजिए:

सामग्री—(1) स्वच्छ पेय जल, (2) चाय, (3) चीनी और (4) दूध

साधन—(1) गैस, (2) लौ को कम—अधिक करने का यन्त्र, (3) पात्र (चाय बनाने लिए), (4) बर्तन (चाय पीने लिए), (5) छलनी, चम्मच आदि।

प्रथम, पीने के स्वच्छ पानी की प्राप्ति पर विचार करो।

बम्बई जैसे बड़े नगरों में इसका प्राप्त होना सम्भव है, क्योंकि बड़ी लागत से बड़े जलाशय का निर्माण और सैकड़ों कर्मचारियों द्वारा जल-वितरण की व्यवस्था है। चाय दूर आसाम के उद्यानों में उगाई जाती है, जो सैकड़ों कर्मचारियों के बुने हुए जाल द्वारा उपभोक्ताओं को प्राप्त होती है। चीनी के कारखानों की आवश्यक मशीनरी पर विचार करो। इन मशीनों के निर्माण में काम सम्बन्धी विधियों और क्रिया-कलापों की एक लम्बी श्रृंखला रहती है—कोयले और कच्चे लोहे का खदान से निकालना, इस्पात (फौलाद) का निर्माण, मशीनों के उपकरणों का निर्माण आदि, जिनमें हजारों कर्मचारी नियुक्त होते हैं। यही तर्क ठीक दूध के वितरण में प्रस्तुत होता है। दूसरी चीजें गैस, बर्नर, पात्र, चम्मच आदि के उत्पादन में सैकड़ों कर्मचारियों की सेवाओं की आवश्यकता होती है। और जरा सोचो, प्रातः जब दूध की गाड़ी विलम्ब से आती है, कैसी हलचल मच जाती है, हो सकता है कि उसका टायर (पहिए का हाल) ही मार्ग में फट गया हो। यह उसकी देख-भाल की कमी या सड़कों की बुरी दशा के कारण भी हो सकता है।

इस प्रकार चाय का एक प्याला कई हजार व्यतियों के काम का संकेत करता है। और चाय जुटाने के लिए हमें कितनी चीजों की आवश्यकता होती है। असन्दिग्धरूप से हमारा अस्तित्व और उसी के समान सुख कई लाख लोगों के

काम पर अवलम्बित है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में विविध धन्धों की अनुमानतः चौंतीस हजार संख्या है, जो आधुनिक संसार में अन्योन्याश्रया के विस्तार को प्रमाणित करते हैं।

प्रत्येक प्राणी अधिकाधिक एक या कुछ अधिक चीजों का निर्माता है, पर वह बहुत सारी वस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करता है। व्यक्ति यदि चीजों के उत्पादन और सेवाओं के प्रदान में अपना दायित्व निभाने में असफल है और दोषपूर्ण वस्तुएं निर्मित करता है तथा अपर्याप्त सेवाएं प्रदान करता है तो अच्छी वस्तुओं और पर्याप्त सेवाओं का उपभोग करने का उसका नैतिक अधिकार नहीं है।

कुछ दिनों पूर्व एक मनोरंजक समाचार छपा था। योरुप के एक नगर में कुछ युवती परिचारिकाएं एक बस में यात्रा कर रही थीं। उसके परिचालक (कण्डक्टर) ने उनके प्रति अत्यधिक अभद्र व्यवहार किया। आपस का संघर्ष जब वृद्धि पर था, बस दुर्घटना-ग्रस्त हो गई और परिचालक को समीपतम अस्पताल ले जाया गया, जिस अस्पताल से परिचारिकाएं सम्बद्ध थीं। अस्पताल के कर्मचारियों ने उस परिचालक के साथ उसी प्रकार का अभद्र व्यवहार किया। "ट्रान्सपोर्ट कर्मचारी संघ" ने इस घटना का बड़ा विरोध किया, किन्तु मूल प्रश्न है कि जिस परिचालक ने परिचारिकाओं के साथ अशिष्ट व्यवहार किया था, क्या उसको परिचारिकाओं से सौहार्दपूर्ण व्यवहार की आशा करना नैतिक रूप से न्यायोचित था?

पारस्परिक सम्पर्क के तकनीक के विशेषज्ञ ई० एफ० शुमाकर अपनी विचारोत्तेजक रचना "लघु सुन्दर है" में यह संकेत करते हैं कि समाज-सेवा करना शिक्षित व्यक्तियों के लिए एक विशेष बाध्यता है। उन्होंने चीनियों द्वारा की हुई गणना का संकेत किया है, जिससे यह प्रमाणित होता है कि एक विद्यापीठ में एक विद्यार्थी के पाँच वर्षीय उपाधि-प्राप्ति के अध्ययन की सहायता करने के लिए तीस किसानों को पाँच वर्ष तक काम करना पड़ता है। इस प्रकार एक स्नातक के प्रशिक्षण का व्यय 150 किसानों के वर्ष भर के काम के समान है। प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति को समाज़ के प्रति अपने दायित्व का ज्ञान रहना चाहिए और अपनी शिक्षा पूर्ण हो जाने पर उसका हित-सम्पादन करना चाहिए। शुमाकर, ने एक मूल प्रश्न प्रस्तुत किया है, क्या शिक्षा विशेष अधिकार का अभीय पत्र है या समाज की सेवा करने की पवित्र बाध्यता। अपने व्यक्तिगत अधिकारों के सम्बन्ध में निरन्तर सोचना एक शिक्षित व्यक्ति के लिए अशोभनीय है। यह वस्तुतः एक कृतघ्नता है। यह उन्हीं लोगों के प्रति अशिष्ट होना है, जिन्होंने उसकी शिक्षा के व्यय का संवहन किया है।

वीर पेण्ढारकर

शुमाकर एक अर्थशास्त्री थे, जो निर्धनों की कल्याण-भावना के साथ गम्भीर रूप से जुड़े हुए थे। उन्होंने इस पर बल दिया है कि भारतवर्ष में शिक्षित लोगों के

समक्ष यह पवित्र बाध्यता है कि वे ग्रामों में अशिक्षित लोगों की सेवा करने के लिए जावें। स्वातन्त्रय युद्ध के सेनानी श्री शंकर गगांराम पेण्ढारकर, जो वीर पेण्ढारकर के नाम से लोक-विश्रुत हैं, उनके द्वारा किये हुए गौरवास्पद शिक्षण कार्य की पृष्ट-भूमि में भी यही स्फूर्तिप्रद विचार मिलता है।

1953 ई० में पेण्ढारकर ने रत्नागिरी जनपद में खरेपाटन संज्ञक एक उपेक्षित गाँव को चुना, जहाँ उस समय कक्षा 7 तक शिक्षा-सम्बन्धी सुविधाएं उपल्लध थीं। उन्होंने इस स्थान को शिक्षा-केन्द्र बनाने का निश्चय किया। आरम्भ में जिस स्कूल में केवल दस विद्यार्थी और एक अध्यापक था वह विकसित होकर एक जूनियर कालेज हो गया, जो लगभग सौ ग्रामों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है।

पेण्ढारकर को दुर्वह असंगतियों के प्रति संघर्ष करना पड़ा। उन्होंने अपने स्कूल को अपनी पत्नी की सहायता से जीर्ण-शीर्ण गोदाम में आरम्भ किया था। आज स्कूल के पास निज का आकर्षक भवन और उससे सम्बद्ध लड़के और लड़कियों के छात्रावास हैं। पेण्ढारकर का बिश्वास है कि शिक्षा विशुद्ध पुस्तकीय न होना चाहिए। शिक्षा मात्र ज्ञान की उपलब्धि नहीं हैं। शिक्षा विद्यार्थियों के अन्तर्गत दायित्व और सामाजिक नव-निर्माण की भावना को भी विकसित करे। शैक्षिक मन्तव्यों की नवीन परिभाषा की जा सकती है और निर्माण सम्बन्धी गतिविधियों में इसके सहयोग द्वारा शैक्षिक पद्धतियों को पूर्णता प्रदान की जा सकती है। पीटर ड्रकर ने अनुभव किया है कि शिक्षा ने अब एक नवीन क्षेत्र प्राप्त कर लिया है, जैसे "ज्ञान का परिवर्तन काम में और परिणाम समाज में।"

पेण्ढारकर के शक्तिवान और कल्पनाशील नेतृत्व से प्रोत्साहित होकर विद्यार्थियों और खरेपाटन के ग्रामीणों ने सूखी और पथरीली पहाड़ियों को स्कूल के चतुर्दिक सुन्दर घेरे में परिवर्तित कर दिया है, जिसमें फूल-फल उद्यान, के कृपि-योग्य खेत और जुड़ी हुई सड़कें हैं। उन्होंने इस उद्देश्य के लिए आत्म समर्पित होकर दिन-रात काम किया है। उनमें परिश्रम के प्रति निरन्तर अनुराग रहा है। इस प्रकार का काम भौतिक रूप से आनन्दप्रद और सौन्दर्यरूप से सन्तोषप्रद होता है। उदाहरण के लिए, एक सुन्दर उद्यान प्रकृति के साथ एकाकार की सूक्ष्म भावना उत्पन्न करता हैं।

यह उल्लेखनीय सफलता पच्चीस वर्ष की निस्वार्थ, व्यवस्थित और स्थायी रूप से काम करने के कारण है। स्पष्टतया पेण्ढारकर को अपने काम में बहुत आनन्द मिल रहा है, क्योंकि इसके माध्यम से उन्हें आत्मानुभूति हो रही है। उनका स्कूल सेठ नवीनचन्द्र मफतलाल विद्यालय, शुमाकर की कहावत "लघु सुन्दर होता है" का एक उचित उदाहरण है। शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए यह एक समर्पित संस्थान है।

14. काम हमारा सबसे बड़ा गुरु है

काम हमारा आजीवन का साथी और उसी प्रकार से हमारा सवसे वड़ा गुरु है। वहुत सी ऐसी वातें हैं, जो पढ़ाई नहीं जा सकती हैं वरन् केवल सीखी जा सकती हैं। तैरने, साइकिल चलाने आदि के समान अनेकों कौशल केवल अभ्यास से प्राप्त किये जा सकते हैं। अभ्यास मानव को पूर्ण वनाता है, यह एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है। उदाहरणार्थ, एक अच्छा संगीतज्ञ नित्य का अभ्यास करने से चूकता नहीं है।

एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक चतुर तैराक भी है, जब उसने यह जानने का प्रयास किया कि उसने किस स्थिति में तैरना सीखा था, यह विचार आते ही वह किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। पानी में जाने पर वह सदैव तैर उठता था। कौशल कभी विश्लेषित नहीं किए जा सकते हैं और न समझे जा सकते हैं।

काम हमको अपने श्रम, अपने अधीनस्थ लोगों, सहयोगियों, अधिकारियों और इनसे भी अधिक महत्वपूर्ण रूप से हमें अपने सम्बन्ध में सिखलाता है। काम हमसे कठोर श्रम कराता है। काम हमें अनुशासित रखता है। काम आत्मसंधान कराता है। काम के माध्यम से हम अपने को अधिक अच्छा समझ पाते हैं। एक आशय में हम स्वयं के लिए अपरिचित होते हैं। यह कठोर, स्थिर और समर्पित काम का ही श्रेय है कि उसके द्वारा हम निज की सीमाएँ जान पाते हैं और हम अपने में पिछली निर्भ्रान्त योग्यताएं प्रवृत्तियाँ और कौशलों की भी खोज कर पाते हैं।

केवल काम हमको सिखला सकता है कि हम काम की कैसे उचित व्यवस्था करें। यह एक जानने योग्य कला है कि हम कव काम करें और कब काम बन्द करें। इस दृष्टिकोण के सन्दंभ में प्रोफेसर गालब्रेथ की अपनी प्रसिद्ध रचना नवीन "औद्योगिक राज्य" (The new Industrial state) की प्रस्तावना मनोरंजक विचार प्रस्तुत करती है। उन्होंने इस पुस्तक की रचना 1957 ई. में आरम्भ की, किन्तु यह 1967 ई. में मुद्रित हुई थी। उन्होंने यह अनुभव किया कि उनकी रचना में चौथी या पाँचवी बार लेखन में आत्माभिव्यक्ति आती हैं। इसलिए वह अपने विषय पर लिखते रहे। वह अपने कार्य का वुद्धि के साथ ताल-मेल बैठाने के लिए प्रयत्नशील रहे। उनका

आरम्भिक लेखन अन्ततः 1969 ई० के लेखन में समन्वित हो गया था, किन्तु तब उनको अचानक राजदूतत्व के लिए भारत बुला लिया गया। उन्होंने अपनी मूल्यवान पाण्डुलिपि बैंक की तिजोरी में बन्द कर दी। जब राजदूत की उनकी अवधि पूर्ण हो गयी, उन्होंने अपनी प्रतिपादित समस्या को एक अच्छे स्वरूप में विकसित किया। उन्होंने पहले की पाण्डुलिपि अमान्य कर दी। उनका निष्कर्ष है: प्रत्येक लेखक को चाहिए कि मुद्रणा से पूर्व पुस्तक में समन्वित विचारों को एक दीर्घकालीन अवकाश दे।

एक अनुभवहीन युवा लेखक का एक अन्य उदाहरण समानरूप से मनोरंजक है। वह अपने रुचि के प्रकल्प पर मनोयोगपूर्वक काम कर रहा था। उसने कितने ही ग्रथांलयों की सैंकड़ों पुस्तकें पढ़ी थीं और उनसे अभिमत भी एकत्रित किए थे। आरम्भिक वर्षों में उसका उत्साह व्यग्रताओं से परिपूर्ण था, पर उसमें अनुशासन की कमी थी।

उसने बड़ी तीव्र गति से टिप्पणियां यह सोचते हुए लिख डालीं कि जब वह अपनी रचना को अन्तिम स्वरूप देगा, तब वह उनकी शुद्धता पर अपेक्षित ध्यान देगा। इसलिए उसने अपने तथ्यों और उदाहरणों के स्रोतों को भी ध्यानपूर्वक नहीं लिखा। अनन्तर वह निराश हो गया, क्योंकि उसकी स्मरण शक्ति ने उसका साथ नहीं दिया और तथ्यों तथा उद्धरणों का प्रमाणित करना उसे समय का अपव्यय प्रतीत हुआ। क्योंकि उनके स्रोतों को उसने ध्यानपूर्वक नहीं लिखा था। इससे उसने अब दो मौलिक किन्तु महत्वपूर्ण पाठ सीखे। प्रथम, आरम्भ से ही शुद्धता का लक्ष्य रखना चाहिए। द्वितीय, स्रोतों को आरम्भ से ही लिखते जाना चाहिये, जिससे तथ्यों और उद्धरणों को प्रमाणित करने में सुविधा हो। यह श्रेय काम को ही है, जिसने उसको ये दो मूल्यवान पाठ पढ़ाए।

एक मनोरंजक घटना एक सैन्य इतिहास से इंगित की जा सकती है। इयन हेमिल्टन (1853-1947 ई.) वास्तव में युद्ध और व्यवस्था सम्बन्धी रचनाओं के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी "सेना की आत्मा" (Soil of the Army) संज्ञक रचना व्यवस्था के सन्दर्भ का एक श्रेष्ठ ग्रंथ है। उनकी "गल्लीपोली डायरी" सजीव और मनोरंजक कही जाती है। उसे उन्होंने शुद्ध, स्पष्ट और मधुर शैली में लिखा था। विन्सटन चर्चिल ने प्रमाणित किया था कि उनकी बुद्धि महान् थी, "चाहे किसी प्रकार का दायित्व हो या संकट हो, बाधित हुए बिना शान्त भाव से काम करना उनका स्वभाव था।" किन्तु गल्लीपोली के युद्ध में उनका आचरण संकटपूर्ण सिद्ध हुआ। इसका कारण है कि आत्मिक विश्वास, मौलिक व्यवहारिक ज्ञान और निर्णय, स्थिति की वास्तविक समझ आदि, जो एक सफल सेनाध्यक्ष के लिए आवश्यक और उल्लेखनीय गुण हैं, जिनकी उनमें कमी थी। ये गुण दिए नहीं जा सकते हैं और न युद्ध-क्षेत्र के बिना उनके होने या न होने का पता चलाया जा सकता

है। इससे युद्ध-क्षेत्र में युद्ध-सम्बन्धी वास्तविक अनुभव का कोई अन्य स्थानापन्न भी नहीं है। शान्त भाव से योजनाएं बनाई जाएं और दूसरे उनको कार्यान्वित करें, यह एक बात है, युद्ध-क्षेत्र की हलचल को शान्त भाव से साक्षात्कार किया जाए और तत्सम्बन्धी तत्काल ही निर्णय लिया जाए, यह दूसरी बात है। इनमें वही अन्तर है- जो बैठकखाने में बिछी दरी के ऊपर रखे तख्ते पर और पांच सौ फीट ऊंची चोटी पर रखे हुए उसी तख्ते पर चलने में है। चेस्टर बरनार्ड ने अपने ज्ञान से यह प्रकट किया है कि जब तक निर्णय लेने का दायित्व न आए, निर्णय ले लेना सम्भव नहीं है।

डगलस मैकग्रेगर ने ठीक ही बल दिया है कि व्यवस्था सम्बन्धी योग्यता काम उपस्थित होने पर ही आती है। एक कार्याधिकारी जब दायित्व की काठी पर बैठा होता है उसके लिए सीखने का श्रेष्ठ अवसर होता हैं, आशय यह है कि जब वह काम कर रहा होता है (वह सीखने की स्थिति में होता है)। विद्वत्परिषदों या कक्षाओं में उलझी हुई समस्याओं के लिए सुन्दर और सरल हल प्रस्तावित करना सुविधा-जनक होता है, किन्तु व्यवहारिक रूप में सरल प्रश्नों को सिद्ध कर सकना दुस्साध्य होता है।

समग्र रूप से यह सत्य है कि काम हमारा सबसे बड़ा गुरु है, जो निष्ठुर और साथ ही हितैषी है। यह मूक होने पर भी वाक्पटु और प्रभावी होता है। वह प्रकाश देता है, मार्ग प्रदर्शित करता है और सहायता करता है। वह हमको निरन्तर देखता रहता है और हमारी योग्यता, पात्रता, तत्परता, और सहिष्णुता की परीक्षा लेता रहता है। वह हमको बहुत मूल्यवान बातें सिखलाता है, जो प्रायः विचार की सीमा के परे होने के कारण सिखाने योग्य नहीं होती है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सदैव उसका (गुरु का) सम्मान करें।

15. लघु क्रान्तिकारी होता है

प्रत्येक मनुष्य अपने देश को प्यार करता है और उसकी सेवा करने की उसकी इच्छा बलवती रहती है। देश भक्ति की भावना विश्व व्यापी है। पर बहुत कम लोग यह तथ्य जानते हैं कि वे शान्त रहकर अपने नित्य-प्रति के कामों को अपनी श्रेष्ठतम योग्यता से करते हुए उसकी सर्वश्रेष्ठ सेवा कर सकते हैं।

अर्थशास्त्री हमें बतलाते हैं कि मानवीय साधन राष्ट्रीय सम्पदा के आवश्यक आधारों का निर्माण करते हैं। मानवीय साधन है—क्षमता, चातुर्य, बुद्धि, सृजनशीलता और लोगों को वस्तुओं के उत्पादन तथा उपयोगी सेवाएं करने में निमग्न रहने का ज्ञान।

यह ठीक ही कहा गया है कि जन-जीवन हमारी बहुत बड़ी सजीव सम्पदा हैं। दूसरी, वनस्पति, यंत्र और भवन अब निर्जीव सम्पदाएं हैं, जो स्वयं में सृजनशील नहीं हैं। केवल मनुष्य उनको उत्पादन के उपयोग में ला सकते हैं। चालक के बिना एक यंत्र कुछ भी उत्पादन नहीं कर सकता है। मनुष्य कई प्रकार से उत्पादन करते हैं। वे संगठन बनाते हैं, नवीन तकनीक का आविष्कार करते हैं, यंत्र और काम करने की पद्धतियों का निर्माण करते हैं और वे स्वयं का भी विकास करते हैं। मानवों के विकास की उच्चतम सीमा नहीं है। संगठनों को इस प्रकार का स्वरूप दिया जा सकता है कि उनका विकास मानवीय विकास के साथ मिश्रित हो जावे।

आधुनिक संसार में मानव प्रायः खो गया है। वह पराधीन बन गया है। वह अपने को अकेला अनुभव करता है। वह अपने शून्य की अनुभूति करने के लिए उद्यत हो गया है, वह विशाल मशीन में अपने को पहिए का एक क्षुद्र दांत सा समझता है। बम्बई जैसे बड़े नगर में वह स्वयं के अनुपयोगी होने की भावना से व्यग्र हो उठता है। कालिन विलसन ने बतलाया है कि इस स्थिति के मध्य में हमें महान् कर्मयोगी या कीड़ा बनने में से किसी एक का चयन करना चाहिए। बहुत से लोग निराश स्थिति के कारण कीड़ा का जीवन चुनते हैं, जो असम्माननीय है। प्रत्येक समाज को जितनी वैज्ञानिकों और दार्शनिकों की आवश्यकता होती है उतनी ही खराद पर काम करने वालों, यंत्रों के अवयवों को यथास्थल बैठाने वालों और

मल एकत्रित करने वालों की आवश्यकता पड़ती है। और वे सब आवश्यक काम कर रहे हैं।

क्रान्तिकारी परिवर्तन बहुधा छोटे-छोटे परिवर्तनों के समूह के परिणाम स्वरूप होते हैं। उदाहरणार्थ, एक कारखाने का वैशिष्ट्य और संस्कृति उचित रूप से नित्य-प्रति के किए अनगिनत कामों, बहुसंख्यक वैधानिक और अवैधानिक वाद-विवादों और उपयोगी बैठकें किए जाने पर निर्भर है। यदि लोग ऐसे छोटे-छोटे कामों में अपनी शक्ति लगा दें तो कारखाना स्वयं शक्तिपुंज के अस्तित्व को प्रस्तुत करे, क्रियाकलापों से भनभना उठे, उत्पादन फट पड़े। अब्राहम मास्लो ने कहा है- "जब एक विशेष साधारण उन्नति उपस्थित हो, मानव होने के नाते हमें गर्व से रोमांचित होना, आवेश-युक्त हो उठना, आत्म सम्मान की पुष्टि की प्रतीति करना, सफल होने की ओजपूर्ण भावना रखना आदि सीखना चाहिए, जिससे यह अनुभव हो सके कि हमने भी इस उन्नति में सहयोग किया है। वह प्रशंसा के साथ एक युवक की घटना का संकेत करते हैं, जिसने मैक्सिको के ग्रामों में पीने के स्वच्छ पानी की व्यवस्था के लिए कुएं खोदने में कई वर्ष लगाए थे। उसने केवल तीन ही कुएं खोदे थे, पर उसने अपना बहुत समय ग्रामीणों को यह सिखाने में लगाया था कि दूषित पानी के स्थान पर उन्हें स्वच्छ पानी पीना चाहिए।

चार्ल्स डारविन ने सिद्ध किया है कि छोटे और क्रमबद्ध कारण लम्बे समय में महान् और मौलिक परिवर्तन उपस्थित कर सकते हैं। उनकी अन्तिम पुस्तक केंचुओं पर थी। वह प्रतिपाद्य विषय के लिए विगत चालीस वर्ष व्यस्त रहे थे। उन्होंने सिद्ध, किया है कि डाउन (इंगलैण्ड) के समीप खरिया मिट्टी या सेलखड़ी की पहाड़ियों पर प्रति वर्ष प्रति एकड़ भूमि पर केंचुए अट्ठारह टन मिट्टी ऊपर लाते हैं। छोटे और नगण्य केंचुओं का यह क्या ही अद्भुत काम है। हाल ही में असकॉट में घुड़दौड़ के प्रसिद्ध मैदान के सुधार के लिए कीड़ों की बढ़ती आबादी को उचित बतलाया गया है।

घोर आलसी व्यक्ति केंचुओं की तुलना में लाख गुने अधिक सक्रिय और उत्पादक हैं। यदि व्यक्ति केंचुओं के समान मिल-जुल कर काम करें तो पृथ्वी पर निकट भविष्य में स्वर्ग आ जाएगा। एक महान समाज में लोग नित्य-प्रति के अपने काम के सम्बन्ध में सोचते हैं और अपने क्षेत्र में वह भले ही सीमित क्यों न हो, उसमें श्रेष्ठता लाने का कठोर परिश्रम करते हैं।

प्राचीन चीन की एक प्रसिद्ध कल्पित कहानी है, जो सिद्ध करती है कि किस प्रकार एक साधारण आदमी, जब महान आदर्शों से प्रेरित और वास्तविक रूप से अपने काम के प्रति समर्पित होता है, अभूतपूर्व काम कर सकता है।

पहाड़ों को हटाने वाला मूर्ख वृद्ध मनुष्य

एक वृद्ध आदमी था, जो वहुत समय पूर्व उत्तर चीन में रहता था और उत्तर पर्वतीय मूर्ख वृद्ध आदमी के नाम से प्रसिद्ध था। उसका घर दक्षिणोन्मुख था और उसके द्वार-मार्ग पर तांईहुंग और बांगूव दो पर्वत के शिखर थे, जो उसके मार्ग को रोकते थे। उसने अपने पुत्रों को बुलाया और कुदाल अपने हाथ में लेकर उन लोगों ने एक महान निश्चय के साथ पहाड़ों को खोदना आरंभ कर दिया। दूसरे श्वेत दाढ़ी वाले व्यक्ति ने, जो बुद्धिमान समझा जाता था, उनको देखा और व्यंग्य के साथ कहा, "तुम मूर्ख हो, जो खोद रहे हो। तुम कुछ लोगों के द्वारा इन दो पर्वतों का खुद सकना असम्भव है।" मूर्ख वृद्ध मनुष्य ने उत्तर दिया, "मैं जव मर जाऊंगा, मेरे पुत्र उसको खोदते रहेंगे, जव वे मर जाएंगे, मेरे पौत्र आ जाएंगे और तव उनके पुत्र और अनन्त काल तक यह क्रम चलता रहेगा। वे जितने ऊंचे हैं, पर्वत उससे अधिक ऊंचे न होंगे, एक-एक टुकड़ा जो हम खोदेंगे, वे उसकी तुलना में अधिक नीचे होते जावेंगे। इससे हम उन्हें क्यों नहीं हटा सकेंगे?" बुद्धिमान वृद्ध व्यक्ति का खण्डन करते हुए उसने अपने निश्चय से विना हिले-डुले प्रतिदिन खोदने का काम चलने दिया। इससे ईश्वर को दया आ गई, और उसने देवदूत भेजे जो अपनी पीठों पर लादकर पर्वतों को उठा ले गए।

और वास्तव में चीन में "किगुवी उत्पादन मण्डल" (Kigubi Production Briqade) ने वही किया जो कल्पित कहानी संकेत करती है। यह मण्डल बहती हुई नदी के पाट से भूमि का एक बहुत भाग निकाल लेने में सफल हुआ, यह वह काम था जिसको कर सकना अव्यावहारिक समझ लिया गया था।

16. काम शोक का वास्तविक विषहर है

शोक मानव जीवन का अंग है। जब तक मृत्यु टलनेवाली नहीं है यह भी टलनेवाला नहीं है। किन्तु यह कोई विवेक नहीं है कि प्रेमी व्यक्ति के निधन पर मानव अपने जीवन को शोकमय कर दे। घोर व्यथा के क्षणों में भी व्यक्ति को अपनी स्वस्थता सुरक्षित रखनी चाहिए। ऐसे समय पर केवल काम ही स्वस्थ धैर्य देकर व्यक्ति का संरक्षक होता है,। ऐसे समयों पर आराम संतापकारक होता है। काम-जनित तृप्ति ही वास्तविक आराम और आनन्द का मूलाधार है, औषधियां और नशा केवल सामयिक मुक्ति प्रदान करते हैं, जो अनन्तः विनाशकारक और अमानवीय हैं। निर्माणकारी काम से ही सन्तोष मिलता है, वह शोक का विषहर है। कुछ घटनाओं में स्वयं शोक ही अव्यक्त रूप से अच्छे काम करने की प्रेरणा प्रदान करता है। लगभग ऐसा ही सर जेम्स टामसन (1804-1853 ई.) की घटना से प्रकट होता है, जो भारतीय दीवानी के अफसरों के राजकुमार कहे जाते हैं।

जेम्स टॉमसन

टॉमसन ने बंगाल सिविल सर्विस में अट्ठारह वर्ष की अवस्था में लेखक के रूप में जीवन आरम्भ किया था और 1843 ई. में इन्हें उत्तर पश्चिम प्रदेश के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर का पद मिला था। इस पद पर वह 1853 ई. में अपनी असामयिक मृत्यु होने तक रहे थे।

जेम्स टॉमसन के काम असाधारण माने जाते हैं। उन्हें सार्वजनिक निर्माण कार्यों का जनक कहा जाता है। ग्राण्ड ट्रंक रोड और गंगा नहर उनके स्मरणीय काम हैं। वह सार्वजनिक शिक्षा-क्षेत्र तथा तांत्रिक शिक्षा के अग्रदूत हैं। लोकविश्रुत रुड़की इंजीनिरिंग कालेज की संस्थापना उन्हीं के द्वारा हुई थी। वह अपने प्रान्त में भूमि-कर प्रशासन के शिल्पकार थे। "कर-अधिकारियों के लिए निर्देश" संज्ञक उनकी कृति कर-प्रशासन के लिए इतिहास के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने जेल-प्रशासन में बहुसंख्यक मानवीय सुधारों के लिए प्रेरणाएं दी थीं, वह सार्व-

जनिक कार्य क्षेत्रों के प्रशासन में बुद्धिमान और दूरदर्शी थे। उनका शासन जन-कल्याण की ओर उन्मुख रहा था, पर उन्हें विशिष्ट प्रशासकों का श्रेष्ठ प्रशिक्षक कहा जाता है।

टॉमसन एक सुकुमार व्यक्ति थे, पर उन्होंने महान उत्साह और अविच्छिन्न शक्ति से काम किया था। उनके उत्साह और उनकी शक्ति का स्रोत क्या था?

उनकी पत्नी वस्तुतः उनकी प्रिय पत्नी का स्मरण उनके उत्साह का स्रोत था। उनका वैवाहिक जीवन पत्नी के अकाल निधन के कारण दुखान्त हो गया था। उनके वैवाहिक जीवन के आरम्भिक कुछ वर्ष अबाधित प्रसन्नता के कारण श्रेष्ठ मधुर रहे थे। अनन्तर उनकी पत्नी असाध्य रूप से रुग्ण हो गई और उन्हें इंगलैण्ड लौट जाना पड़ा, जहां उनके अथक प्रयासों और एकनिष्ठ सावधानी रखने पर भी उनका निधन हो गया।

इस क्षति को टॉमसन कठिनता से सह सके थे। बाद में उन्होंने अपनी समग्र सावधानी और स्नेह उनको समर्पित कर दिया, जिन लोगों की सेवा में वह तत्पर थे। उनका शोक गहरा और गम्भीर था, पर उसने उन्हें पंगु नहीं बना दिया। यह कहा जाता है कि ऐसी क्षति के अनन्तर जो स्निग्धता आती हैं उससे उनका शेष जीवन आप्लावित रहा।

प्रशासनिक कार्यों में उनकी पत्नी का स्मरण उनके लिए उत्साह का अजस्र स्रोत रहा है। परोपकारी काम करने की कामना में उनका शोक निमग्न हो गया था। उनके द्वारा किए स्मरणीय काम उनकी प्रिय पत्नी के स्मारक हैं।

17. काम आत्मानुभूति की ओर उन्मुख करता है

मानवीय आवश्यकताएं अनन्त हैं। मानव सदैव अभाव की प्रतीति करनेवाला जीव है, जो कभी तृप्त नहीं होता है। उसकी आवश्यकताएं भी लगातार बदलती रहती हैं। उदाहरणार्थ, जब उसे कई-दिनों तक भोजन न मिले, वह मात्र भोजन के सम्बन्ध में सोचता रहेगा और किसी के सम्बन्ध में नहीं। वह तब प्रेम के सम्बन्ध में ठिठोली करेगा। किन्तु जिस क्षण उसकी भूख तृप्त हो जाएगी, वह भोजन के सम्बन्ध में सभी कुछ भूल जाएगा और प्रेम के लिए दुखी होना आरम्भ कर देगा। उसकी बहुत सी आवश्यकताएं उनके महत्व के अनुसार पूरी की जा सकती हैं, जैसा नीचे दिखलाया गया है। यह कहा जा सकता है कि परिवार की रागात्मक आवश्यकताओं के अतिरिक्त सम्भवतः शेष सभी काम के द्वारा पूरी हो सकती है। काम पूर्ण रूप से मनुष्य के लिए वैसे ही आवश्यक है जैसे भोजन या पानी। काम के स्वरूप को समझे बिना मनुष्य और समाज को समझ सकना असम्भव है। मानवीय जीवन काम के माध्यम से ही उनको पूर्ण कर पाता है। और मानवीय कार्य सामाजिक जीवन के लिए रक्त का स्रोत प्रदान करते हैं।

मानवीय आवश्यकताएं हैं :

(1) पर्याप्त आय, उचित आवास, अच्छा भोजन।

(2) भूचाल, बाढ़, रोग आदि प्राकृतिक विपत्तियों और राजविप्लव जैसी सामाजिक आपत्तियों से संरक्षण।

(3) परिवार के सदस्यों, मित्रों और सहकारियों के प्रति प्रेम।

(4) आत्म सम्मान, निज का महत्व, और आत्म विश्वास।

(5) प्रसिद्धि, प्रशंसा, जीवन-स्तर।

(6) अपने ज्ञान के संवर्द्धन और अपनी बोध गम्यता को गहन करने की इच्छा।

(7) आत्मानुभूति अर्थात व्यक्ति के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास।

(8) अपनी श्रेष्ठता अर्थात कुछ दुस्तर विघ्नों पर विजय प्राप्त करना।

मास्लो के मानवीय प्रेरणा सम्बन्धी प्रसिद्ध सिद्धान्त का यह सरलीकृत रूप है।

आत्मानुभूति मानवीय आवश्यकताओं में सर्वोपरि है। यह मनुष्य की सर्वश्रेष्ठ महत्वपूर्ण आवश्यकता है। आत्मानुभूति का सीधा-सादा अर्थ है आत्म विकास का उच्चतम स्वरूप। आत्म निरीक्षण एक निरन्तर चलती रहनेवाली क्रिया शीलता की पद्धति है, जो कभी समाप्त नहीं होती है। आत्मनिरीक्षण करनेवाले व्यक्ति का स्वरूप इस प्रकार का होता है। वह अपने काम के प्रति पवित्र भाव से निष्ठा रखता है। वह दायित्व लेता है। वह स्वतंत्र रूप से सोचता है। वह गुणों के प्रति भावापन्न होता है। वह स्वयं को समझने का प्रयत्न करता है और अहं, को उसमें मिला देता है। वह अपने सभी व्यवहारों में अपने और दूसरों के प्रति ईमानदार रहता है। वह स्वभावानुसार आचरण करता है जिसमें सरलता और स्वाभाविकता रहती है। वह आनन्दयुक्त रहता है, क्योंकि अपने ओछे और निम्न कोटि के विचारों से उसकी अन्तरात्मा कभी पीड़ित नहीं रहती है। आत्मानुभूति के लिए अपेक्षित गहन प्रयासों का वह उपयोग करता है, क्योंकि उस दिशा में प्रत्येक प्रगति उसके लिए श्रेष्ठ आनन्द के क्षण होते हैं। तब उसका काम पृथ्वी पर सबसे अधिक पवित्र हो जाता है। तब काम उसके लिए खेल हो जाता है और वह काम को ही स्वय के लिए पुरस्कार स्वरूप देखता है।

आत्म निरीक्षकों से आत्मविजेता एक पग आगे रहते है। वे विचारवान होते हैं। वे नवीन मार्ग के संस्थापक होते हैं। वे अपने प्रयासों में दृढ़तर रहते हैं और स्पष्टतः असम्भव को सम्भव करने में सफल होते हैं। वे दुस्तर विघ्नों पर भी विजय प्राप्त करते हैं।

उदाहरण के लिए, महात्मा गांधी एक विजयी आत्म निरीक्षक थे। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि इस प्रकार का आदर्श समाज में महान व्यक्तियों के लिए ही होता है। क्रिकेट का एक खिलाड़ी भी अपने क्षेत्र में आत्मनिरीक्षक से परे आत्म-विजेता हो सकता है। वह बल्लेबाजी का एक नया स्तर स्थापित कर सकता है। सोकेर का राजापेले एक आत्मविजेता माना जा सकता है। उसका खिलाड़ीपन आदर उत्पन्न करनेवाला है, किन्तु अहंकार और ओछापन उसको छू नहीं गया है। वह क्रीड़ा-क्षेत्र पर या उसके वाहर सदैव एक भद्र पुरुष रहा है।

(1) डगलस बभ्रादर : एक विजयी आत्म निरीक्षक

डगलस वआदर द्वितीय विश्व युद्ध में एक युद्ध की टुकड़ी के नायक थे, उनकी टाँगे नहीं थीं। उनकी व्यक्तिगत वीरता की कहानियां सम्भवतः अद्वितीय हैं। उन्होंने राजकीय वायुसेना में 1928 ई. में प्रवेश लिया था और 1931 ई. में जब वह हवाई जहाज द्वारा एक व्यावहारिक प्रदर्शन प्रस्तुत कर रहे थे उनका जहाज क्षति ग्रस्त होकर धातु का ढेर बन गया। उनकी दोनों टांगें नष्ट हो गई थीं।

राजकीय वायुसेना ने उनकी दोनों कृत्रिम टाँगें लगवा दी थीं। अपने अधिक प्रयास के फलस्वरूप उन्होंने उनकी सहायता से चलना सीख लिया था। 1939ई. की युद्ध-घोषणा के बाद वह फिर राजकीय वायु सेना में लौट आए। उनकी 242 संख्यक टुकड़ी बड़ी प्रसिद्ध हुई। लड़नेवाली सेना में यह टुकड़ी श्रेष्ठ समझी गई थी। बआदर के स्वयं पन्द्रह चोटें लगीं थी। 1941 ई. में उन्हें युद्ध-सेना का अध्यक्ष (विंग कमाण्डर) बनाया गया था।

अगस्त. 1941 ई, में उन पर गोली का वार किया गया और जर्मन लोगों ने उन्हें बन्दी बना लिया। उनकी एक कृत्रिम टांग नष्ट हो गई थी। इस समय वह राजकीय वायुसेना और लुफ्तवफे (जर्मन वायुसेना) दोनों की ही चर्चा के विषय बन गए थे। लुफ्तवफे ने राजकीय वायुसेना को इस क्षति का सन्देश भेजा था, उनके स्थानापन्न की व्यवस्था कर दी गई थी। उनकी यह अभूतपूर्व सच्ची वीरता उनके महान साहस और उपलब्धियों के फलस्वरूप थी।

युद्ध-बन्दी के रूप में बआदर असाधारण साहसी थे। वह सदैव भाग निकलने की योजनाएं बनाया करते थे। विजय-समारोहों में वह 'स्पिट फाइर्स' (लड़ाक हवाई जहाज का नाम) द्वारा उड़ान सम्बन्धी प्रदर्शन प्रस्तुत किया करते थे।

बआदर ने अपनी उपलब्धियों द्वारा सैंकड़ों अपंग व्यक्तियों को प्रोत्साहित किया था। उन्हें आत्मविजयी व्यक्ति की कक्षा में रखा जाना चाहिए। उन्होंने चिन्तनीय शारीरिक पंगुताओं पर सफलता पूर्वक विजय प्राप्त की थी और अपने क्षेत्र में असाधारण महत्व अर्जित किया था।

(२) विश्वेश्वरैया : एक महान आत्मनिरीक्षक

विश्वेश्वरैया सौ वर्ष से अधिक जीवित रहे थे और "भारत रत्न" की उपाधि से सम्मानित हुए थे। वह एक महान आत्मनिरीक्षक थे। वह आधुनिक भारत के महान हितैषियों और निस्वार्थ महात्माओं में से एक थे, उन्होंने अपनी दीर्घायु राष्ट्र-सेवा में समर्पित कर दी थी।

अपनी किशोर अवस्था में वह बड़े निर्बल और कोमल दिखलाई पड़ते थे, जिससे उनके संस्कृत अध्यापक को परिहास में यह कहना पड़ा था, "यह विश्वेश्वरैया तीस वर्ष की अवस्था पर बोल जाएगा (समाप्त हो जाएगा)।" एक बार उनसे पूछा गया था, "तुम्हारी दीर्घायु का क्या रहस्य है।" उनका उत्तर था, "कठोर परिश्रम, अनुशासित स्वभाव, विलास में संयम, तृप्ति, प्रफुल्लता।"

वह एक चपल प्रवृत्ति के इंजीनियर थे, जो बाद में अपनी योग्यता और व्यापक दृष्टि के फलस्वरूप एक राजनीतिज्ञ प्रशासक हो गए थे। इंजीनियर के रूप में वह कई प्रकार से प्रसिद्ध हुए थे। उन्होंने नए प्रकार के यंत्र बनाए थे, सिंचाई की नवीन पद्धतियां और उसमें नवीनताएं जैसे बांध के फाटकों का अपने

आप खुल जाना, प्रचलित की। मैसूर के दीवान के रूप में उनको यह श्रेय है कि उसका बहुमुखी विकास हुआ था, वह आधुनिक मैसूर के निर्माणकर्ता कहे जाते हैं, जो यथार्थ है। वह प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत में आर्थिक योजना का सूत्र-पात किया था। उन्होंने ही हमको यह स्मरणीय नारा दिया था, "उत्पादन करो या मरो।"

विश्वेश्वरैया में पूर्णता की लगन थी। उनके लिए सभी काम पवित्र थे। "यदि बाधा को मिटाना तुम्हारा काम है तो याद रखो कि तुम्हारा यह कर्तव्य है कि तुम उसे संसार में अच्छी प्रकार से मिटा दो।" जब उन्होंने मैसूर के दीवान-पद से त्यागपत्र दिया, उन्होंने महाराज को लिखा था, "मैंने कोई भी काम शेष नहीं छोड़ा है।" उन्हें काम में असावधानी पसन्द न थी।

विश्वेश्वरैया समय के पूर्ण व्यवस्थापक थे, उन्हें अपने समय की बड़ी परवाह थी। अपराह्न 4.15 बजे एक अधिकारी को उनसे मिलने का निश्चय था। उसने 4.10 बजे अपने नाम का पत्र भीतर भेजा। विश्वेश्वरैया ने उससे कहा, "इस प्रकार तुमने मेरे मूल्यवान पांच मिनट छीन लिए।" उनके समय का लेखा-जोखा सदैव सतर्कता से तैयार किया जाता था। उनके समक्ष सोने के आदर्श समय का निर्धारण था। "स्वभावतः पांच घंटे, अधिक व्यस्त के लिए सात घंटे, और आलसी के लिए नौ घंटे।" मैसूर के दीवान-पद पर रहकर रविवारों और दूसरी छुट्टियों के अतिरिक्त अन्य दिनों वह 7 बजे प्रातः से एक बजे अपराह्न तक और तीन बजे अपराह्न से आठ बजे रात तक काम किया करते थे। वह एक कठोर और सहृदय अनुशासक थे।

1947 ई. में 87 वर्ष की अवस्था में उन्होंने दिल्ली में प्रथम औद्योगिक सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। वह चार बजे प्रातः होटल के अपने कमरे में उठ गए थे और बम्बई में पिछले दिन जो भाषण उन्होंने बोलकर लिखाया था, उसको अपनी स्मृति में ले आए थे। उनका लक्ष्य सदैव शुद्धता पर रहता था। वह कभी भी अपने स्मरण पर विश्वास न करते थे, सब तथ्यों तथा संख्याओं का स्थायी रूप से मिलान कर लिया करते थे। वह निर्मल वस्त्र पहननेवालों में से एक थे और व्यस्त दिन की थकान के अन्तिम समय भी उनके वस्त्रों पर धूल का एक कण भी न रहता था।

वस्तुतः वह सिद्धान्तवादी व्यक्ति थे। उनमें पूर्ण सच्चाई थी। जब वह एक सहायक इन्जीनियर थे, उन्हें बहुत भ्रमण करना पड़ता था। अपने पड़ाव के समय कार्यालय के उपयोग में वह शासन की मोमबत्तियां ही जलाया करते थे, उनकी निज की मोमबत्तियां भी रहती थीं, जिनका उपयोग वह अपने व्यक्तिगत कामों के समय किया करते थे। मैसूर राज्य के दीवान-पद से त्यागपत्र देने के बाद

वह अपनी मोटर गाड़ी से अपने आवास पर आए थे, जो पहले से तैयार खड़ी थी। नियुक्तियों और पदोन्नतियों के प्रसंग में उन्होंने किसी के प्रति कभी भी पक्षपात नहीं दिखलाया था। इस उद्देश्य के लिए योग्यता के अतिरिक्त उनके समक्ष अन्य प्रमाण की मान्यता न थी।

उन्होंने पूर्ण मानवता प्राप्त कर ली थी। उन्होंने अपने को पहचान लिया था।

18. प्रेरणा : आरोग्यशास्त्र का सिद्धान्त

यह बड़ा महत्वपूर्ण सिद्धान्त है, जिसको हेज़बेग ने पुष्ट किया है। यह मेकग्रेगर के प्रसिद्ध सिद्धान्त वाई (y) के समकक्ष प्रतिष्ठित है। मैं पिछले पृष्ठों में सिद्ध कर चुका हूं कि मनुष्यों को विविध कारणों के फलस्वरूप अवश्य काम करना चाहिए। उन्हें प्रथम और प्रधान रूप से अपनी जाग्रत रुचि के अनुसार काम करना चाहिए। सार्थक काम के बिना मनुष्य पंगु हो जाता है। "प्रेरणा—आरोग्यशास्त्र का सिद्धान्त" इन तथ्यों को सैद्धान्तिक रूप से प्रस्तुत करता है।

आरम्भ करने के लिए एक सरल उदाहरण पर विचार करो। कल्पना करो कि तुम अपने कार्यालय में एक महत्वपूर्ण विवरण लिखा रहे हो। तुम्हारी कुर्सी खटमलों से भरी है, जिसके कारण तुम्हें बेचैनी है। कुर्सी बदल दी जाती है और तुम्हारी बेचैनी मिट जाती है।

किन्तु तुम अब भी दुःखी हो, क्योंकि तुम्हारा काम उचित रूप से आगे नहीं बढ़ रहा है। जिन हलों (समाधानों) को तुम सोचते हो तुम्हें अनुपयोगी प्रतीत होते हैं और यह सोचकर तुम्हारी व्यग्रता बढ़ती जाती है। तुम्हारे विवरण भी अपर्याप्त हैं।

दोषपूर्ण कुर्सी के कारण तुम जो असुविधा सोचते हो वह काम की असन्तोष-जनक प्रगति के कारण उत्पन्न व्यग्रता से अलग प्रकार की है।

प्रथम का सम्बन्ध तुम्हारी पाशविक आवश्यकताओं से है। क्योंकि पशु तक इस प्रकार के शारीरिक सुख की खोज करते हैं, पर वे कभी बोलकर विवरण नहीं लिखाते हैं। किन्तु दूसरा तो मनुष्य का विशेष अधिकार है। यह तो मनुष्य की विशेष प्रकार की आवश्यकता है। मनुष्य बौद्धिक उपलब्धि की कामना करता है। पाशविक और मानवीय आवश्यकताओं का यह अन्तर ही "प्रेरणा-आरोग्यशास्त्र के सिद्धान्त" का आधार है। इस सिद्धान्त के अनुसार जब मानव मानसिक रूप से विकास करता है वह वास्तव में स्वस्थ रह सकता है।

मानवीय और पाशविक आवश्यकताएं

मनुष्य को बहुत-सी चीजों की आवश्यकता होती है। उसकी आवश्यकताएं दो श्रेणियों में विभाजित की जा सकती हैं —पाशविक आवश्यकताएं(उन्हें आरोग्य-शास्त्र के तत्व, व्यवस्था के तत्व या असन्तोषकारक भी कहा जाता है)। और मानवीय आवश्यकताएं (उन्हें प्रेरणाएं अथवा सन्तोषकारक भी कहा जाता है। पाशविक आवश्यकताओं का सम्बन्ध वातावरण जनित व्यथा से सुरक्षित रखने का होता है। मानवीय आवश्यकताएं काम के माध्यम से मस्तिष्कीय विकास प्राप्त करती है।

पाशविक आवश्यकताएं	मानवीय आवश्यकताएं
(1) संस्था की नीति और प्रशासन	(1) सफलता
(2) निरीक्षण	(2) प्रसिद्धि
(3) पारस्परिक सम्बन्ध	(3) स्वयं काम
(4) काम करने की शर्तें	(4) दायित्व
(5) वेतन	(5) उन्नति

पाशविक आवश्यकताएं मनुष्य के पाशविक स्वभाव से उत्पन्न होती हैं। ये आवश्यकताएं भूख, वासना, शारीरिक सुख, सुरक्षा आदि जैसी आरम्भिक इच्छाओं से सम्बद्ध रहती हैं। पर मनुष्य का श्रेष्ठ लक्ष्य सर्जक (उत्पादक) के फलस्वरूप अपने को, अपनी सहज क्षमताओं और वास्तविक सीमाओं में बद्ध रहकर अपने अद्वितीय मानवीय रूप को पूर्ण करना है। निरन्तर अपने मानसिक विकास और काम के प्रति अपने दायित्व की कटिवद्धता से मनुष्य को अपनी क्षमता का ज्ञान होता है। वह उच्च स्तर के कर्त्तव्यों को पूर्ण करने के लिए अपने को साधन-सम्पन्न करता है।

यह सिद्धान्त इन दो श्रेणियों की आवश्यकताओं का अन्तर तत्सम्बन्धी उनकी अभिव्यक्तियों के प्रकार की स्वीकृति से स्पष्ट हो जाता है। ये नीचे सूचीबद्ध हैं :

आवश्यकता का प्रकार	विशिष्ट गुण	परिणाम	
		असन्तुष्ट	सन्तुष्ट
पाशविक आवश्यकताएं (उन्हें असन्तोषकारक, आरोग्यशास्त्र के तत्व या व्यवस्था के तत्व भी कहा जाता है)	वातावरण जनित व्यथा से संरक्षण	असन्तोष	असन्तोष नहीं मस्तिष्कीय रुग्णता का अभाव
मानवीय आवश्यकताएं (सन्तोषकारक या प्रेरक)	काम द्वारा मस्तिष्कीय विकास	काम के प्रति असन्तोष	काम में सन्तोष मस्तिष्कीय स्वस्थता

इन आवश्यकताओं का प्रभाव विरोधी दिशाओं में रहता है। (प्रथम के अन्तर्गत) सन्तोष वह चीज नहीं है जो (द्वितीय में) काम करने के सन्तोष में है। (उनमें ठीक वही अन्तर है जो देखने और सुनने में है)। इसी प्रकार (प्रथम में) मस्तिष्कीय रुग्णता का अभाव वह चीज नहीं है जो (द्वितीय में) मस्तिष्कीय स्वस्थता में है। आरामदायक कुर्सी पर बैठने से जो अनुभूति होती है वह उस अनुभूति से अलग है, जो व्यक्ति को एक कठिन काम पूर्ण करने से होती है।

इस वस्तु स्थिति से अलग होकर यह कहा जा सकता है कि मानव की श्रेष्ठ आवश्यकता मानसिक विकास है। यह विकास सार्थक, संघर्ष-युक्त और सृजनशील काम द्वारा हो सकता है। मनुष्य तब वस्तुतः प्रसन्न और स्वस्थ होता है।

मानसिक विकास

मानसिक विकास की निम्नांकित कक्षाएं हैं :

(1) **अधिक जानना**—एक मनुष्य अपने ज्ञान की अभिवृद्धि कर सकता है। वह सदैव अपने अनुभव से सीख सीखता है। जब वह इस प्रकार अपने ज्ञान को बढ़ाता है वह स्वयं अपने मानव रूप की अभिवृद्धि करता है।

(2) **ज्ञान में सम्बद्धता**—एक व्यक्ति बहुत से तथ्यों को अन्योन्याश्रय अथवा प्रसंग को समझे बिना मन से सीख सकता है। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी एक व्यापारिक संस्थान की आर्थिक दशा अच्छी है या बुरी है, बताने के योग्य हुए बिना ही उसके आय-व्यय के चिट्ठे को याद कर सकता है। एक व्यक्ति 'हेमलेट' को हृदय से सीख सकता है, फिर भी वह नाटक को पूरी तरह नहीं समझता है। तथ्यों को स्मरण करने और उनको भली प्रकार समझने में अन्तर है। एक विद्यार्थी से यह पूछा गया था कि किसी विशेष नदी की अवस्था क्या है ? उसने कहा, उसकी अवस्था थी तीस लाख इक्कीस वर्ष। जब उससे यह प्रश्न किया गया कि वह इस ठीक संख्या पर कैसे पहुंच सका है ? उसने कहा कि इक्कीस वर्ष पहले विशेषज्ञों ने इसकी अवस्था तीस लाख वर्ष बतलाई थी।

(3) **उत्पादन (सृजन)**—पशु किसी चीज का उत्पादन नहीं कर सकते हैं। मानव कर सकते हैं। वे नवीन मन्तव्य, नवीन विचार और सिद्धान्त विकसित कर सकते हैं। वे यंत्रों को नवीन स्वरूप दे सकते हैं और नवीन गतिविधियां विकसित कर सकते हैं। वे नवीन संगठन बना सकते हैं। उत्पादन मानवों की सबसे बड़ी प्रसन्नता का स्रोत है।

(4) **अनिश्चित स्थिति में प्रभावशीलता**—मानवीय क्रिया-कलापों का संसार मिश्र और अनिश्चित रहता है। उदाहरण के लिए कोई यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता है कि निकट भविष्य में व्यापार की दशाएं किस रूप में परिवर्तित हो जाएंगी। केवल एक अनुभवी व्यक्ति ही अनिश्चित स्थितियों, को झेल सकता है

और शान्त भाव से उचित निर्णय ले सकता है। उच्चस्तरीय व्यवस्था में अनिश्चित स्थितियों परिवर्तनों और अनिश्चित गतिविधियों में काम करने की योग्यता बड़ी महत्त्वपूर्ण है।

(5) **व्यक्तित्व का संरक्षण**—यह है, वर्ग के दबाव और प्रचार के समक्ष बिना झुके स्वतंत्र रूप से सोचने की योग्यता। उदाहरण के लिए समालोचक एक नाटक की विशेष प्रकार से प्रशंसा कर सकता है, किन्तु यदि एक व्यक्ति को वह अच्छा नहीं लगता है तो उसे अपने विचार कहने और रखने का साहस अवश्य होना चाहिए।

(6) **सच्चा विकास**—सच्चे विकास की परिभाषा बड़ी कठिन है। इस योग्यता को ही यह श्रेय है कि इसके द्वारा झूठ से सच को अलग किया जा सकता है। यह वह दृष्टि है, जिससे यह देखा जावे कि महत्त्वपूर्ण क्या है? नीचे की कहानी इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती है:

"एक अरबपती विवाह के एक दलाल के पास जाता है और उससे कहता है कि उसे एक पत्नी की तलाश है। दलाल उत्साह में भरकर एक सुन्दर लड़की का गुणगान करता है, जिसका तीसरी बार "मिस अमेरिका" के लिए चयन हुआ था। किन्तु धनी व्यक्ति अपना सिर हिला देता है, "मैं स्वयं काफी सुन्दर हूं।" अपने व्यवसाय के लचीलेपन के कारण दलाल एक लड़की की प्रशंसा करने को अग्रसर होता है, जिसका दहेज कई लाख डालर था। "मुझे सम्पदा की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं स्वयं काफी धनी हूं।" दलाल तीसरी फाइल निकालता है और एक लड़की का प्रस्ताव करता हैं, जो इक्कीस वर्ष की अवस्था में गणित की प्राध्यापिका रही थी और चौवीस वर्ष की अवस्था में एम. आई. टी. में सूचना सिद्धान्त की प्रोफेसर थी। अरबपती ने उपेक्षा के साथ कहा—"मुझे विदुषी की आवश्यकना नहीं है क्योंकि मैं स्वयं ही काफी बुद्धिमान हूं।" दलाल निराश स्थिति में चीख पड़ता है, "भगवान के नाम पर (तुम बतलाओ), तुम क्या चाहते हो?" उत्तर है, "भद्रता।"

सारांश में इस सिद्धान्त की व्याख्या है कि किस प्रकार मानव का मस्तिष्कीय विकास मानसिक विकास के आश्रित है, जो बदले में सार्थक, उत्तरदायी, संघर्षशील और सृजनशील काम के आश्रित है।

प्रेरक		विकास का सिद्धान्त
सफलता और सफलता के लिए प्रसिद्धि	—	ज्ञान-संवर्द्धन का सुयोग।
दायित्व	—	समझदारी बढ़ाने का सुयोग।
विकास की सम्भावना	—	उत्पादन के लिए सुयोग।
उन्नति	—	अनिश्चित स्थिति में निर्णय करने के अनुभव का सुयोग।
रुचि	—	व्यक्तित्व-संरक्षण और वास्तविक विकास की खोज का सुयोग।

हेजवेग इसीलिए कारखानों और कार्यालयों में काम के ढांचे और स्वरूप के पुनर्गठन की वकालत करते हैं। काम इस प्रकार सम्पन्न हो, जिससे मानवीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति और विकास के लिए पर्याप्त क्षेत्र उपस्थित रहे, क्योंकि व्यक्तित्व व्यापक क्षमताओं से युक्त होता है।

निम्नांकित तालिका विस्तृतरूप से प्रेरणाओं का मानसिक विकास के स्तरों से सम्बन्ध इंगित करती है :

नोवल पुरस्कार के विजेता कोनराड लोरेंज ने "सभ्य मानव के आठ भयंकर पाप" (Civilised Man's Eight Deadly Sins) संज्ञक रचना में यह प्रमाणित करने के लिए वहुत से दृष्टान्त प्रस्तुत किए हैं कि संघर्षपूर्ण काम के बिना जीवन पूर्णतया असह्य हो जाता है। उदाहरण के लिए शिक्षाविद कुर्त हान ने समुद्र में डूबनेवालों को वचाने के लिए प्रस्तुत नौकाओं पर नाविकों का काम देकर अधिक ऊबे व्यक्तियों के रोग का हरण करने में सफलता प्राप्त की थी। इस प्रकार के संकटपूर्ण काम करने से उनके जीवन की नैराश्यपूर्ण भावना ठीक हो गई। वियाना निवासी एक अन्धों के अध्यापक ने ऐसी घटनाओं के विवरण दिए हैं, जिनमें युवकों ने अपने सिरों पर गोली मार ली और जीवन भर के लिए अन्धे हो गए। उन्होंने फिर अपने जीवनों को पूर्ववत व्यतीत नहीं किया। इसके स्थान पर वे संयत और प्रसन्न व्यक्ति सिद्ध हुए। गम्भीर ऊब के कारण एक बालिका खिड़की से बाहर कूद गई, जिससे उसकी पीठ टूट गई। इस प्रकार उसके कमर के नीचे भाग में पक्षाघात हो गया, किन्तु उसके बाद वह प्रसन्न और सन्तुष्ट रहने लगी।

जब एक व्यक्ति अपने सृजनशील और संघर्षपूर्ण काम से सम्वद्ध हो जाता है, उसका जीवन सार्थक और मनोरंजक हो जाता है। लोरेंज ने स्पष्ट किया है : "विना कठोर परिश्रम के विषय-वासना का सुख उठाया जा सकता, है, पर आनन्द प्राप्त नहीं किया जा सकता है।"

माण्टेगू नार्मन

इस प्रसंग में माण्टेगू नार्मन (1871 ई०—1950 ई०) की घटना संक्षेप में उल्लेखनीय है। माण्टेगू नार्मन एक अद्वितीय और सर्वाधिक विवाद योग्य व्यक्ति थे। वह 1920 ई० से1 944 ई० तक बैंक आव इंगलैण्ड के प्रशासक रहे थे, बैंक के पूरे इतिहास में उनका सेवा-काल अपूर्व और अप्रतिम रहा था। अपनी आरम्भिक अवस्था में मस्तिष्कीय व्यग्रताओं और सिर-पीड़ा के कारण वह अयोग्य हो गए थे। वह कई-कई दिनों तक न किसी से मिल पाते थे और न वात कर पाते थे। 1911ई० में वह पूर्ण रूप से असाध्य हो गए थे। वह दो महीने तक न कुछ कर सके और न उन्हें कुछ स्मरण ही रहता था। उन्हें1913 ई० में विश्व के प्रसिद्ध मानस-विश्लेषक कार्ल जुंग का अभिमत लेने के लिए प्रेरित किया गया। आरम्भिक परीक्षणों के

वाद जुंग ने उन्हें कई महीनों तक पूर्ण विश्राम करने, अनन्तर अपनी देख-भाल में मानस विश्लेषक उपचार चलने देने के लिए सलाह दी। नार्मन इस निर्णय से हताश हो गए थे। "क्योंकि चार सप्ताह उन्हें अंधेरे कमरे में लिटाए रखकर उनके रोग-ग्रस्त सिर का उपचार चला था।" उनके डाक्टरों ने यह सोच लिया था कि वह कुछ महीनों से अधिक जीवित न रहेंगे। तब स्विटजरलैण्ड के नाड़ी रोगों के विशेषज्ञ डाक्टर रागर विट्टोज से मिलने के लिए उन्हें सलाह दी गई। उनके नवीन उपचार द्वारा कष्ट से उन्हें तात्कालिक मुक्ति मिली। विट्टोज ने नार्मन को एकाग्र मन से काम में निमग्न रहने की सलाह दी। उन्होंने कहा था कि काम ठीक ऐसा हो कि नार्मन के मस्तिष्क में अन्य व्यग्रताओं के लिए कोई स्थान हा न रहे। बैंक आव इंग्लैण्ड के प्रशासक के रूप में वह चौवीस वर्ष तक अपने काम में इस प्रकार डूबे रहे थे कि वह सार्थक जीवन जी सके थे। यह एक श्रेष्ट घटना है जो हेजवेग के सिद्धान्त का पूर्ण समर्थन करती है। अन्ततः विश्लेषण द्वारा यह सिद्ध होता है कि हमारा स्वास्थय और हमारी प्रसन्नता हमारे अपने काम पर निर्भर है।

19. उपसंहार

काम में लगे मनुष्य का अध्ययन सम्बन्धी विषय विस्तृत और आकर्षक है, जो कभी समाप्त होनेवाला नहीं है। सच तो यह है कि मात्र काम ही मानव जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण विचार है। वस्तुतः इसका दार्शनिक की सच्ची कसौटी के समान वर्णन किया जाता है, जो मानवता की समग्र निम्नधातु को सोना बना देती है।

टायन्वी का आदर्श कथन था : "मनुष्य अपने काम और उद्योग पर सन्ध्या तक के लिए जाया करता है।" बर्ट्रेण्ड रसेल ने ठीक यही बात कही है : "बुद्धिमान मनुष्य की इच्छा हो कि वह काम करते-करते मरे।" राष्ट्रीय हृदय औषधालय, लन्दन के शल्य चिकित्सा के निदेशक डॉ० डोनाल्ड रोज ने हाल में कहा था : "कठोर काम नहीं, पर निकम्मापन लोगों को मारता है।"

जीवन में रुचिकर काम किए बिना मनुष्य को वास्तविक आनन्द नहीं मिल सकता है। इसी प्रकार काम के प्रति सच्ची कटिबद्धता के बिना मनुष्य स्वयं शान्त नहीं हो सकता है। भारत में निर्धनता व्यापक रूप से फैली हुई है, इससे राष्ट्रीय दृष्टिकोण के साथ समर्पित और अनुशासित भाव से काम करना जितना आवश्यक है उतना अन्य कुछ नहीं।

इस अपूर्ण छोटी पुस्तिका का तर्क अपने महान प्राचीन ऋषि याज्ञवल्क्य के विवेकपूर्ण शब्दों में समन्वित किया जा सकता है। उनका कथन है—एक व्यक्ति द्वारा किए समग्र कामों का योग ही उसका व्यक्तित्व है। व्यक्ति इन कामों के फलस्वरूप ही मृत्यु के बाद भी जीवित रहता है। अच्छे कामों से व्यक्ति अच्छा बनता है और बुरे कामों से बुरा।

20. संदर्भ ग्रन्थ

Anderson Harold, H. (Ed.)-Creativity and Its Cultivation

Argyle Michael-The Social Psychology of work

Awasthi, D—The Dawn of Moderm Administration in India

Baritz, Loren-The Servants of Power

Bendix, Reinhard-Work and Authority in Industry

Birth Centenary Commemoration Volume (Dr. M. Visvesvaraya).

Blumberg, Paul-Industrial Democracy : The Sociology of Participation

Book of the Year 1975 (Britannica).

Brian, Robert-Friends and Lovers

Brooks, John (Ed.)- The One and the Many

Brown, J. A. C.-The Social Psychology of Industry

Bullock, Alan (Introduction)-History of the Twentieth Century

Canning, John (Ed.).-100 Great Modern Lives

Carver, Sir Michael-The War Lords.

Charles A.—Industrialism and Industrial law.

Committec of Concerned Asians-China : Inside the People's Republic

Constitution, The Forty-Second Amendment Act, 1976

Davis, E. Louis and Cherns, Albert B. (Ed.)-The Quality of Working Life, Volumes I and II

Doing Desmond-Mother Téresa

Dore, Ronald-British Factory-Japanese Factory

Drucker, Peter-Management, Task, Responsibilities and Practices.

Drucker, Peter-The Practice of Management.
Feinberg Barry and Kasrils Ronald(Ed.)-Dear Bertrand Russell.
Fraser, Ronald (Ed.)-Work, Volume II.
Galbraith, J. K.-The New Industrial State.
Gay, Peter-The Enlightenment.
Ghiselin, Brewster-The Creative Process.
Herzberg, F.-Work and the Nature of Man.
Holt, John-Freedom and Beyond.
Huizinga, Johan-Homo Ludens.
Huxley, Julian and H. B. D. Kettlewell-Charles Darwin and His World.
Kerr, Clark; Dunlop, John T; Harbison, Frederick H.; Myers.
Lederer, Muriel-The Guide to Career Education
Leger, Fernand-The Documents of Twentieth Century Art.
Lewis W. Arthur-Theory of Economic Growth.
Lorenz, Konrad-Civilized Man's Eight Deadly Sins.
Lorenz, Konrad-On Aggression.
Magee, Bryan (Ed.)-Modrn British Philosophy.
Malcolm, Norman-Ludwig Wittgenstein.
Maraini Fosco-Japan-Patterns of Continuity.
Maslow, Abraham H.-Eupsychian Management.
Mc Clelland, David C. and Winter, David G.-Motivating Economic Achievement.
Mc Clelland, David C.-The Achieving Society.
Mc Gregor, Douglas-The Human Side of Enterprise.
Mehta, Ved-Fly and the Fly-bottle.
Mikes, George-The Land of the Rising Yen.
Ross, Donald-The Times of India, December 30, 1976 (Interview).
Rowland, Jon-Community Decay.
Russell, Bertrand-In Praise of Idleness.
Russell, Bertrand-New Hopes for a changing World.
Russell, Bertrend-Portraits from Memory.
Rustomji, Nari-Enchanted Frontiers.

Schumacher, E. F.-Small is Beautiful.
Scitovsky, Tibor-The Joyless Economy.
Setalvad, Motilal C.-My Life
Toynbee, Arnold J.-Experiences.
Tulpule, Bagaram-My Experiences at the Durgapur Steel Works-A Public Sector Undertaking-Sadhana (Marathi) Special Issue, 1 May 1977
Verney, Richard E. (Ed.)-The Student Life (The Philosophy of Sir William Osler).
Vernon, P. E. (Ed.)-Creativity.
Voltaire-Candide.
Whitefield, P. R.-Creativity in Industry
Whitehead, A. N.-The Aims of Education
Williams Francis-A Pattern of Rulers.
Wilson Harold-Thc Governance of Britain.
Worsley, Peter (Ed.) Introducing Sociology.
Zaehner, R. D. C.—Concordant Discord.
Zweig, F.—The Quest for Fellowship.

91310
23-2-99

कर्मयोग ही गीता का मुख्य उपदेश है। मनुष्य को जीवन पर्यंत सततकाम करना चाहिए। काम करने में ही व्यक्ति और समष्टि का विकास निहित है। काम करने से शरीर निरोग रहता है और मन प्रसन्न रहता है। कर्म प्रधान जीवन ही सुंदर होता है।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक श्री स. आ. सप्रे, महाराष्ट्र राज्य शासकीय मुद्रण व लेखन सामग्री विभाग के सेवा निवृत्त संचालक हैं। इस पुस्तक में उन्होंने कर्मयोग का महत्व प्रतिपादित किया है। श्री सप्रे इन्स्टिट्यूट फॉर दि स्टडी आफ लेबर' नामक संस्था के संस्थापक हैं। आपने प्रशासन व मुद्रणकला विषयों की अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

रु. 6·50

Library IIAS, Shimla
H 170.202 Sa 77 K
00091310

नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली